सूय

डायमण्ड, फील्डमार्शल के पम्पिंग सेट, जनरेटर सेट्स तथा डबल फ्लाई ह्वील

इंजन व स्पेयर पार्ट्स के अधिकृत विक्रेता

कांक्रीट मिक्सर मशीन के निर्माता एवं विक्रेता

सर्विस सुविधा 24 घंटे

जी.ए. इण्टर प्राइजेज

ऑफिस :

1—डी, अम्बेडकर नगर, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद फोन :(0532) 2695478, 2694459

ब्रान्च शो रूम : घूरपुर बाजार, इलाहाबाद

☎223817

अधिकृत डीलर : रानू आटोमोबाइल्स

बरहज रोड, देवरिया, उ0प्र0

घातक बीमारी एड्स से बचने का सबसे आसान और सुरक्षित तरीका है कंडोम का इस्तेमाल।

सुरक्षा ही बचावं

जी.पी.एफ.सोसायटी द्वारा जनहित में जारी

गणतंत्र दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएँ ☎2401109

बर्धमान साड़ी कलेक्शन

142, जीरो रोड, घंटाघर, इलाहाबाद

वैवाहिक कलात्मक एवं आकर्षक साड़ियों का अनुपम संग्रहालय

आपका सहयोग ही हमारी प्रगति का एकमात्र सम्बल है।

खुल गया कपड़ो का भव्य शो रूम

स्टूडेन्ट्स टेलर्स, शगुन चौक की नई भेंट

लगन

कलेक्शन

THE REVISIT SHOP

Raymond

मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे सिविल लाईन्स, इलाहाबाद फोन : 2608082

वर्ष : 2, अंक 17, फरवरी 2003

हिन्दी मासिक पत्रिका

स्नेह समाज

संरक्षक : श्री बुद्धिसेन शर्मा

संपादक

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्यकारी संपादकः डॉ0 कुसुम लता मिश्रा

सह कार्य0 संपादकः विजयलक्ष्मी 'विभा'

सहायक संपादक

0 रजनीश कुमार तिवारी 0 सीमा मिश्रा

सलाहकार संपादक

नवलाख अहमद सिद्दीकी

साहित्यसंपादक : डॉ0 भगवान प्रसाद उपाध्याय

विज्ञापन प्रबंधक : श्रीमती जया द्विवेदी

ब्युरो :

जागृति नगरिया (सामा0 व्यूरो, इला0)

गिरिराजजी दूबे (गोरखपुर)

ज्ञानेन्द्र सिंह (मिर्जापुर)

सूर्यकांत त्रिपाठी (फतेहपुर)

मो0 तारिक ज्या (जौनपुर)

इन्द्रहास पाण्डेय (गुजरात)

सुजीत सिंह (प्रतापगढ़)

पत्र व्यवहार कार्यालय :

एल0आई0जी 93, नीमसराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद

सम्पादकीय कार्यालयः

एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

बातचीतः 2552444

स्वत्वाधिकारी, सपांदक, प्रकाशक व मुद्रक **गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी** द्वारा **भार्गव प्रेस,** बाई का बाग, इलाहाबाद, से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : 8380/2001

सम्पादकीय

प्रिय पाठक मित्रों, नमस्कार

यह पुरानावर्ष हर वर्ष की तरह फिर समय की धनी कंदराओं में अतीत के साथ गुम हो गया। अपना बहुत कुछ खोकर, एक शिशु की भॉति हम पुनः प्रसन्न हो नये वर्ष के स्वागत् समारोह में व्यस्त हो गये। लगता है हमारे जीवन का यही मुख्य उद्देश्य रह गया है। जो प्रतिवर्ष इसी गति से चलता रहता है जीवन चक्र अनवरत।

हम असली मुद्दे से सदैव मागते रहे हैं। कभी इतिहास में घुसकार अंजरपंजर टटोलते हैं, तो कभी वर्तमान में चल रहे पाकिस्तान के रीति रिवाजों पर अपना खेद प्रकट करते हैं। कभी सवाल गुजरात के नरसंहार पर उठता है तो कभी आर्थिक घोटालों पर। पक्ष–विपक्ष के द्वन्दात्मक स्वरुप काल कारनामों से रंगा दैनिक पत्र पढ़ने के हम अभ्यस्त हो गये हैं। अभी कुछ समय पूर्व सोनिया गॉधी के मूल को लेकर तमाम विवाद उठे थे। विपक्षियों ने अच्छा खासा वितंण्डावाद खड़ा कर दिया। हमारा भारतीय हिन्दू धर्म, उपनिषद, वेद सभी कहते हैं कि जिस वर से कन्या का परिणय होता है उस वर की धर्म, जाति, सम्प्रदाय, माता–पिता, भाई–बहन सम्पत्ति सबकी साम्राज्ञी, अधिष्ठात्री, रक्षिका स्वामिनी संवेद्विका, उसकी पत्नी हो जाती है। ये सारे अधिकार उसकी पत्नी होने पर स्वतः कन्या को मिल जाते हैं। **वेदें में लिखा है–साम्राज्ञी–स्वसुरे भव साम्राज्ञी स्वस्रवाभव**

ननान्दरी साम्राज्ञी भव, साम्राज्ञी अधिदेवषु

फिर बुद्धिजीवी होते हुए भी विपक्ष ने सोनिया के साथ सौतेला व्यवहार क्यों किया? स्वार्थ से अभिप्रेत उसे गोरी चुड़ैल, विदेशी जादुगरनी, बाहरी हवा, जैसी गालियों से क्यों नवाजा? जबकि स्वयं एक महिला भाजपा की प्रवक्ता श्रीमती स्वराज जी स्वयं उन्हें आया तक कहने में जरा भी वे नहीं हिचकायी। स्वयं तो भारतीय बेटी बनी रहीं और सोनिया भारतीय बहू होकर भी सारे अधिकारों से वंचित रहे, क्यों? 2002 का विगत यह वर्ष सबसे निंदनीय एवं विकृत पूर्ण रहा। जो संस्कृति के मुंह पर तमाचा है। जिसमें स्वार्थ की भंयकर सड़ाँध भी है। विदेशों में हमारी संस्कृति हमारी शान है किन्तु इस प्रकार के वक्तब्यों से हम हंसी के पात्र बन गये हैं। विदेशियों के समक्ष अपने संस्कारों को स्वयं ठगा दिखा रहा रहे है। हमारे देश के नायक एवं महानायक। उपनिषद की शिक्षाओं का अपमान करना अपनी आध्यत्मिकता और आत्मा को गिराना है।

नये वर्ष में प्रयाग का गौरव महान हुआ यहॉ विधान मण्डल का उत्तर शती आयोजन किया गया, मित्रों नये वर्ष में पुनः शुभकामनाओं के साथ मैं आपसे क्षमा प्रार्थी हूं। कारण यह अंक आपके हाथों में विलम्ब से आया, आप सुख समृद्धि एवं आनंद से वर्ष का भरपूर स्वागत करे। पत्रिका कैसी लगी अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें। प्रतीक्षा में पत्रिका परिवार एवं

आपकी

कुसुमलता मिश्रा

संस्थापित :1987 उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ☎ 2636421

श्याल लाल इंटर कॉलेज

चकिया, कसारी–मसारी, इलाहाबाद

प्रधानचार्या

सुनीता कुशवाहा

एम.ए.बी.एड

कक्षा :केजी से 12 तक (विज्ञान एवं कलावर्ग)

(बालक/बालिकाओं)

प्रबंधक

अनिल कुशवाहा

कोलंबिया की आंधी ने चमकते सितारे को डूबो दिया

अरूण कुमार दूबे

अंतरिक्ष यान कोलंबिया 16 दिन के अभियान से लौटते समय 1 फरवरी 03 को अमेरिका के टेक्सास प्रांत के ऊपर करीब दो लाख फुट की ऊँचाई पर विखंडित हो गया और उसमें सवार भारतीय मूल की महिला अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला समेत सात अंतरिक्ष यात्रियों की मृत्यु हो गयी।

अंतरिक्ष यान कोलंबिया को भारतीय समयानुसार सायं 7 बजकर 45 मिनट पर फ्लोरिडा स्थित कैनेडी स्पेस सेंटर में उतरना था। लेकिन इससे महज 16 मिनट पूर्व यान का नासा से संपर्क टूट गया। उत्तरी टेक्सास के लोगों का कहना है कि उन्होंने उसी समय तेज धमाके की आवाज सूनी थी। कोंलबिया, नासा से संपर्क टूटते समय 63,000 मीटर की ऊँचाई पर था और 20,000 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से नीचे आ रहा था। इस यान में सवार एक इस्रायली के अलावा करनाल, हरियाणा, भारत में जन्मी कल्पना चावला समेत छः अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री थे। कल्पना चावला इस सात सदस्यीय अभियान में सबसे अनुभवी विज्ञानी थीं। यह उनका पांच साल में दूसरा अंतरिक्ष अभियान था।

स्पेस शटल कोलंबिया को 1988 में कमीशन मिला था। यह इस बार अपने 28 वें मिशन पर गया था। नासा के 42 साल के इतिहास में यान के उतरते समय दुर्घटना ग्रस्त होने की यह पहली घटना है। अभी कुछ दिनों पहले ही दो अन्य अंतरिक्ष हादसों की बरसी मनाई गई थी। इसमें 27 जनवरी 1967 का अपोलो स्पेस क्राफ्ट दुर्घटना ग्रस्त होने से तीन विज्ञानी मारे गये थे। दूसरा 1986 में चैलेजंर स्पेस क्राफ्ट के उड़ान भरते ही फट जाने से सात अंतरिक्ष यात्री मारे गये थे।

कुछ विशेषज्ञों ने इस हादसे में आतंकवादियों का हाथ होने के संकेत दिये है। लेकिन व्हाइट हाउस ने इसे निराधार बताया है। विज्ञान के जानकारों का मानना है कि स्पेस शटल उतरने के कुछ मिनट पहले दुर्घटना ग्रस्त होने का मतलब पृथ्वी की ओर से घर्षण ज्यादा होना ही हो सकता है। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिकों ने आशंका जताई है कि स्पेस शटल कई बार अंतरिक्ष की यात्राा कर चुका था। इसलिए उसमें तकनीकी खराबी भी हो सकती है।

सैकड़ो जाने ले चुका है अंतरिक्ष मिशन

1. 1960 में सोवियत संघ के दो चरणों वाले राकेट के इंजन आर–16 में बिजली की खराब वायरिंग के कारण विस्फोट हो गया। इस हादसे में 91 लोग मारे गये थे।

2. 1966 में नील आर्मस्ट्रांग का अंतरिक्ष यान भी हादसे का शिकार होते–होते बच गया।

3. 1967 में अपोलो 1 अंतरिक्ष यान के दुर्घटना ग्रस्त होने से तीन अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री मारे गये थे। इसमें चिंगारी निकलने से नाइलॉन के कपड़े में आग लग गई, धीरे–धीरे पूरा यान ही इसकी चपेट में आ गया। कार्बन मोनो आक्साइट जैसी जहरीली गैस निकलने से दम घुटने कारण यात्रियों की मौत हो गई।

1 फरवरी 2003 हादसे का विवरण

सायं 6:45 बजे कोलंबिया धरती के लिए रवाना

सायं 7:23 बजे नासा का शटल के बाएं हाइड्रोलिक सिस्टम के ताप की गणना करने वाले उपकरण से संपर्क टूटा

सायं 7:28 बजे नासा ने शटल की बाईं ओर लगे तीन ताप सेंसरों से सपर्क खोया

सायं 7:29 बजे शटल के अन्य उपकरणों से भी संपर्क टूटना शुरू। नासा ने अंतरिक्ष यात्रियों से संपर्क किया। कोलंबिया से जबाव आया–रोजर, उह...।

सायं 7:30 बजे जमीन से 62140 मीटर की ऊँचाई पर कोलंबिया से संपर्क पूरी तरह समाप्त। इसके साथ ही कोलंबिया जबरदस्त आवाज के साथ टुकड़े में बंट गया।

कल्पना की चांद छूने की लालसा अधूरी रह गयी।

कुछ नया करने का जुनून और तूफानी जज्बा हो तो मंजिल तक पहुँचने से कोई रोक नहीं सकता। हरियाणा के करनाल शहर में जन्मी कल्पना चावला ने इसे साबित कर दिया। लेकिन उनका चाँद छूने की लालसा उनकी अधूरी रह गयी।

1 जुलाई 1961 को जन्मी कल्पना चावला ने टैगोर स्कूल में शुरूआती पढ़ाई के बाद 1982 में चंडीगढ़ के पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज से वैमानिकी आभियांत्रिकी में स्नातक की डिग्री हासिल की। उच्च शिक्षा के लिए वह अमेरिका गयी और 1984 में टेक्सास विश्वविद्यालय से इसी विषय में पी.एच.डी. की डिग्री ली।

कल्पना ने 1988 में अमेरिका के नेशनल एयरोनाटिक्स एण्ड स्पेस एडमिनिस्ट्रेश (नासा) के शोध केन्द्रों में काम करना शुरू किया। नासा में कई प्रकार के शोध करने के बाद उन्होंने कैलिर्फोनिया की एक कंपनी में उपाध्यक्ष और शोध वैज्ञानिक के तौर पर काम किया। यहॉ उन्होंने एयरोडायनमिक्स से संबंधित कई विषयों पर काम किया। कल्पना के शोध कार्य से प्रभावित होकर नासा ने 1994 में उन्हें अंतरिक्ष यात्री प्रशिक्षण के लिए चुना और उन्होंने 1994 में 22 अन्य प्रशिक्षुओं के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा किया। जिनमें पॉच महिलाये शामिल थी। इसके बाद कल्पना ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्हें 1997 में पहली बार अंतरिक्ष में जाने का मौका मिला। पृथ्वी से 65लाख मील की दूरी पर 376 घंटे से भी अधिक समय गुजारने के बाद वह पांच दिसम्बर 1997 को वापस लौटी।

41 वर्षीय इस अंतरिक्ष यात्री पर बचपन से ही एयरोनॉटिकल इंजीनियर बनने का जुनून सवार था। पिछले महीने मिशन पर निकलने से पहले उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा था– बचपन से ही जिस क्षेत्र में जाना चाहती थी वहॉ पहुँचने के लिए मैंने एड़ी चोटी का जोर लगा दिया था। कल्पना कम उम्र में ही लगातार सफलता की सीढ़िया चढ़ने का रिकार्ड है। उनका कहना था कि बचपन में हवाई जहाज को उड़ते देखकर वह अपने भाई के साथ इसे देखने घर से बाहर निकल जाती थी। जब उन्होंने एयरोनॉटिकल इंजीनियर बनने की बात कही तो परिवार के लोगों ने इसका जबरदस्त विरोध किया। उनके पिता ने उन्हें डॉक्टर या शिक्षक बनने की सलाह दी थी। कल्पना के अनुसार जब वह इंजीनियरिंग में दाखिले के लिए इंटरव्यू देने जा रही थी, तब उनके पिताजी इतने गुस्सें में थे कि वह उनके साथ कॉलेज भी नहीं गये। इस कारण उन्हें मॉ के साथ जाना पड़ा। बाद में उनकी जिद के आगे पिता जो झुकना पड़ा।

लेखक / लेखिकाओं के लिए

1.काग़ज के सिर्फ एक ओर पर्याप्त हाशिया छोड़कर सुपाठ्य अक्षरों में लिखी अथवा टाइप की हुई रंचनाएँ भेजें।

2-jpukdsl kFki ; kZr fVdV yxk] y[skd kdkirkfy[kkfy QkQkvkuk pkfg, Abl dsvHkko esa]ge jpuklsl ef/kr fdl hHkhckr dkmRrj ughanaxsA

3-jpukdsi Ek i "B ij y[skd dkijwkukevkSvUr esay[skdkdk ijwkvfadr gkukpkfg, A

4-dkbZHkhjpukyxHkx i Unzg l kSkCnksa svf/kd dhu Hkst saA ge y[skdksa fQygkyWdkbZ kfj Jfed ughansr sgSA

मायावती की तानाशाही तलवार, फँसे भाजपा के विनय कटियार

✍ सूर्यकांत त्रिपाठी "मणि"

अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्रा को "जनता द्वारा जनता के लिए शासन" बताया था और हमारे संविधान ने बड़े ही विश्वास के साथ इसे लोकतन्त्रात्मक व्यवस्था को अपनाया था। आज लगभग सभी राजनीतिक दल उनके विचारों पर तुषारापात कर रहे हैं। आज–कल उत्तर प्रदेश में सुश्री मायावती अपने पद का दुरूपयोग कर कुण्डा के विधायक राजा भैया तथा उनके पिता पर पोटा लगाया है, पोटा की जननी भाजपा अपने हाथ बांधे और मुँह बन्द किये अपने स्वार्थ के कारण चुपचाप खड़ी हैं। पूर्व मुख्यमंत्री राजनाथ सिंह तथा भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री कटियार के बयानों को मायावती तथा भाजपा हाईकमान गम्भीरता से क्यों नहीं ले रही है। रही बात मायावती का पोटा तथा कटियार का सोटा तो सच है कि दोनों अपने–आप में सोटा फिट कर रहे हैं। मायावती के मंत्रिमंडल में अपराधिक छवि के नेताओं की कमी नहीं है। तमाम मंत्री ऐसे भी शामिल हैं जो कि भाजपा सरकार में जेल भी गये थे मायावती उनको सजा क्यों नहीं दे रही है। उनका अपराध मुक्त करने का प्रमाण केवल कुछ विधायकों के ऊपर ही मिलता क्योंकि उन्होंने समर्थन वापस ले लिया है। पुराने मुकदमें को लेकर परेशान किया जा रहा है। वह इतने पुराने हैं कि मायावती दो बार और मुख्यमंत्री रह चुकी है। तब क्यों नहीं कार्यरूप दी।

भाजपा जो अब भी बसपा का अपनी केन्द्र सरकार को बचाने के लिए समर्थन दे रही है और अपना बचा–खुचा जनाधार भी खोना चाहती हैं। प्रधानमंत्री बाजपेयी अपने आपको अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के सामने एक शान्ति पुरूष की छवि को दिखाना चाहते है। सरकार के शासन काल में प्रतिदिन की आवश्यक वस्तुओं के दाम आसमान छू रहे है तथा भारत सरकार अमेरिका के इशारे पर चल रही है। जो फूट डालो की नीति पर चल रहा है। इस समय सबसे बड़ा आंतकवादी देश अमेरिका ही है। जो पहले अफगानिस्तान तथा अब इराक पर परमाणु हथियारों का प्रयोग करने जा रही हैं।

भारत सरकार आन्तरिक स्थिति पर भी काबू नहीं पा रही है। बीरप्पन जैसे माफिया डान को आज तक नहीं पकड़ सकी। कभी साम्प्रादियक दंगा होता है तो कहीं पर अपहरण की घटनाएं होती है। जिससे समाचार पत्रा भरा रहता है। आन्तरिक स्थिति तो बदत्तर है ही इसके साथ ही साथ हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान, बांग्लादेश प्रमुख रूप से सदैव सीमा क्षेत्रा का उल्लंघन करते है और फिर गोली बारी होती है। इतना ही नहीं हमारी सम्प्रभुता का प्रतीक संसद पर हमला हुआ पर भारत सरकार ने अमेरिका के आगे घुटने टेकने के सिवा कुछ नही कर सकी। यदि हम सरकार के चार वर्षो का आकलन करते हैं तो यह सरकार अब तक की सबसे बदत्तर सरकार है। जो केवल अमेरिका के इशारे पर चलना जानती है।

मैं पाठकों का ध्यान पुनः उत्तर प्रदेश सरकार पर लाना चाहता हूँ जहां बिजली का समस्या का दंश विद्यार्थी तथा किसान झेल रहा है। इस मूलभूत समस्या की ओर मुख्यमंत्री का ध्यान नहीं जा रहा है। क्योंकि उनको पार्क बनवाने तथा अपने राजनीतिक दुश्मनों से लड़ने के अलावा समय कहां है। मुख्यमंत्री जनता को बताएं कि विश्व बैंक द्वारा उत्तर प्रदेश विद्युत कारपोरेशन को विद्युत सुधार के लिए दिये गये पैसे कहा गये। यदि सुधार हुआ तो कहां हुआ और विश्व बैंक ने पुनः राशि न देने से इंकार क्यों किया। अभी जिस प्रकार कांग्रेस के विधायकों को मंत्री पद का लालच देकर उनको अलग कर दिया। यह राजनीति की ओछी चाल हैं यदि ऐसा ही रहा तो सभी पार्टियों को यह कभी न कभी भुगतना पड़ेगा।

पोटा कानून का राजनीतिक दुरूपयोग पर ध्यान देना चाहिए। किसी के दोष को सिद्ध किए बिना कैसे उसको अपराधी सिद्ध किया जा सकता है। यह कार्य न्यायपालिका का है। किसी राजनीतिक दल का नहीं। जिस तरह पूर्व मुख्यमंत्री राजनाथ सिंह तथा विनय कटियार के बयानों को भाजपा हाईकमान ने अनसुना कर दिया और केवल जांच आदेश देकर अपनी औपचारिकता पूरी की है उसका खामियाजा अगले चुनाव में भाजपा को अवश्य भुगतना पड़ेगा।

मैं विधायक का पक्ष नहीं ले रहा हूँ बल्कि यह स्वं सोचना कि थोड़ी सी बात के लिए पोटा जैसे कानून का प्रयोग करना महज विद्वेश राजनीति है। इसका विरोध जनता के साथ ही पक्ष–विपक्ष के सभी विधायकों को करना चाहिए। क्योंकि इसका प्रयोग किसी दिन उन पर भी हो सकता है और जनता पर क्या होगा यह तो भगवान ही जाने। पोटा का इस्तेमाल राजनीतिक विद्वेष के कारण नहीं किया जाना चाहिए।

वर्ष 2002 की कुछ खास घटनाँए

7 जनवरी : राज्यपाल ने मदरसा शिक्षा बोर्ड अध्यादेश सरकार को लाटा दिया।

9 जनवरी: स्थाई संसदीय समिति की बैठक में प्रिंट मीडिया में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का रास्ता साफ कर दिया।

15 जनवरी : केन्द्रीय मंत्रीमण्डल ने आम जन के तिरंगा फहराने के रास्ता साफ कर दिया। इसके लिए राष्ट्रध्वज की गरिमा और सम्मान का पूरा ध्यान रखना होगा।

22 जनवरी : मोटरसाईकिल सवार अज्ञात बंदूकधारियों ने आज बड़े सवरे कोलकाता शहर के बीचोबीच में स्थित अमेरिकी सूचना केन्द्र पर धावा बोलकर वहां तैनात चार सुरक्षाकर्मियों की हत्या कर दी तथा 21 लोगों को घायल कर दिया।

24 जनवरी: भारत ने अंतरिक्ष में इनसेट–3सी को कक्षा में स्थापित कर दिया।

30 जनवरी: भारतीय नौसेना ने युद्धपोत आईएनएस द्रोणाचार्य से कल सफलतापूर्वक जमीन से हवा में मार करने वाली मिसाइल 'त्रिशूल का सफल परीक्षण किया।

8 फरवरी: चार विदेशी आतंकियो ने अपनी जान बचाने के लिए आज एक बार फिर उत्तरी काश्मीर के कुपवाड़ा जिले में एक मसजिद में शरण ली।

27 फरवरी: गुजरात के पंचमहल जिले में गोधरा रेलवे स्टेशन पर उपद्रियों ने हमला बोलकर चार डिब्बों में आग लगा दी। जिससे 58 यात्री जिंदा जल गये और43 अन्य घायल हो गए।

वरिष्ठ कांग्रेसी नेता नारायण दत्त तिवारी उत्तराचंल के नए मुख्यमंत्री होगे।

2 मार्च: उ0प्र0 की भाजपा सरकार ने जाते–जाते अंशकालिक कर्मचारियों और बेराजगारों को एक और बड़ा देते हुए इन पर रोक लगा दी।

3मार्च: भारत के पहले दलित और सबसे कम उम्र के लोकसभा अध्यक्ष गंती मोहनचंद बालयोगी का आंध्रप्रदेश में हेलिकाप्टर दुर्घटना में निधन हो गया।

26 मार्च: संसद के दोनों सदनों की सयुक्त बैठक में आतंकवाद निरोधी विधेयक पोटो पारित हो गया।

31 मार्च : ब्रिटेन की राजमाता महारानी एलिजाबेथ द्वितीय का 101 वर्ष की उम्र में निधन हो गया।

31मार्च: बॉलीवुड के प्रसिद्ध गीतकार आनंद बख्शी का 72 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उन्होंने अपने 45 साल के फिल्म कैरियर में चार हजार से ज्यादा गीत लिखे। पुराने दौर में बख्शी ने मिलन, महल, दो रास्ते, हिमालय की गोंद में,जीवन–मृत्यु, खिलौना, अराधना, हरे रामा हरे कृष्णा, कटी पंतग, सीता और गीता तथा नये दौर में दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे, दिल तो पागल है, मोहब्बते, ताल, यादें और गदर एक प्रेम कथा के लिए गीत लिखे।

4 अप्रैल: क्रिकेट की बाइबिल विजडन ने भारत के स्टार बल्लेबाज वी.वी.एस.लक्ष्मण को वर्ष के पांच सर्वश्रेष्ठ क्रिकेटरों की सूची में शामिल किया।

6 अप्रैल: दुबई निवासी भारतीय उद्योगपति और 1.5 अरब डॉलर के कारोबार वाले जंबो ग्रुप के प्रमुख मनोहर राजाराम छाबड़िया का दिल का दौरा पड़ने से 56वर्ष की उम्र में निधन हो गया।

11 अप्रैल: गुजरात के गोंधरा कांड के सूत्रधार अनवर रसीद अंसारी को स्थानीय पुलिस ने भदोही के निकट नूरखांपुर स्थित उसके घर से गिरफ्तार किया। यह प्रतिबंधित संगठन सिमी का जिला संयोजक है।

11 अप्रैल: पन्नापुरी, हापुड़ मे कुवर पाल शर्मा की दूध की डेयरी के ऊपर दूसरी मंजिल पर किराये पर रहने वाला गौतमबुद्ध नगर के काकोड़ क्षेत्र के शाहपुर कनई गांव का निवासी अनिल कुमार सिंभावली में ट्रक चलाता था। आर्थिक तंगी में दाने–दाने को मोहताज हो चला यह परिवार को 10 अप्रैल को सुबह महिला और उसके छः बच्चों के साथ मृत पायी गयी। पोस्टमार्टस रिर्पोट से यह बात सामने आयी इन सभी ने जहर का सेवन किया था।

मृतका के पास एक सुसाइड नोट में उसने कर्ज व बीमारी के कारण आत्मघाती कदम उठाने की बात लिखी थी।

16 अप्रैल: सतर्कता विभाग ने बिजली विभाग में ट्रांसफामरों की फर्जी खरीद व मरम्मत के जरिये 1 अरब के घोटाले का पर्दाफाश किया है।

19 अप्रैल: मास्टर बलास्टर सचिन तेदुंलकर ने टेस्ट मैंच में सन डॉन की बराबरी की।

29 अप्रैल: उ0प्र0 राज्यपाल श्री विष्णुकांत शास्त्री ने बसपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुश्री मायावती को सरकार बनाने का न्योता दिया

3 मई :बसपा नेत्री मायावती ने उ0प्र0 33वी मुख्यमंत्री के रुप में शपथ ली।

12 मई: श्रमजीवी एक्सप्रेस लखनऊ–वाराणसी बाया फैजाबाद मार्ग पर मालीकलां हाल्ट स्टेशन पर दुर्घटनाग्रस्त हो गई।

14 मई: इलाहाबाद से भाजपा के टिकट पर छठवी बार जीत दर्ज करने वाले कानून विषेशज्ञ पं0 केशरीनाथ त्रिपाठी को तीसरी बार निर्विरोध विधानसभा अध्यक्ष चुन लिया गया।

21 मई: हुरियत कांफ्रेस के वरिष्ठ नेता अब्दुल गनी लोन की एक रैली में मारकर हत्या कर दी गई।

शेष अगले अंक में ....

मंदिर–मसजिद बैर कराते, प्यार कराती मधुशाला

✍ जी0के0द्विवेदी

इस प्रिये; तुम हो मधु है,
उस पार न जाने क्या होगा
मिट्टी का तन; मस्ती का मन,
क्षण भर जीवन मेरा परिचय।

हाँलावाद के प्रर्वतक कवि डॉ0 हरिवंश राय बच्चन ने अकेले दम पर हिंदी साहित्य की अकथनीय सेवा की। इलाहाबाद में 27 नवम्बर 1907 को जन्में श्री बच्चन के पिता का नाम प्रताप नारायण व उनकी माता का नाम सुरसती था। बचपन में उन्हें बच्चन नाम से उनके माता–पिता पुकारा करते थे, वह नाम आज विश्व का एक जाना माना नाम हो गया है। वे अपनी माता–पिता के छठवीं संतान थे। कायस्थ पाठशाला, मुट्ठीगंज इलाहाबाद से 1925 में हाईस्कूल द्वितीय श्रेणी से पासकर राजकीय इंटर कॉलेज, इलाहाबाद में इंटर में प्रवेश लिया। पढ़ाई का खर्चा वह ट्यूशन पढ़ाकर पूरा करते थे। उनका विवाह 1926 में श्यामा के साथ हुआ। ग्रजुऐशन के दौरान वे पायनियर में गस्ती एजेंन्ट का काम करते हुए मधुशाला की रचना किए। इलाहाबाद में ही उनके बड़े बेटे सुपर स्टार अमिताभ बच्चन का जन्म हुआ। रूग्ण पत्नी के उपचार में रात दिन लगे हुए उन्होंने 'मधुकलश' की कविताएं लिखी थी। इलाहाबाद और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से शिक्षा–दीक्षा संपन्न कर डॉ0 बच्चन इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हो गए। कुछ समय बाद पीएचडी के सिलसिले में उन्हें कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय जाना पड़ा। वहां 'डब्लू बी ईट्स एण्ड ओकल्टिज्म' विषय पर शोध कार्य के बाद बच्चन जी स्वदेश लौट आए। इसके बाद वह फिर अध्यापन कार्य में प्रवृत्त हुए लेकिन एक साल बाद ही उन्होंने स्वयं को इस दायित्व से मुक्त कर दिया। इसके बाद वह

इलाहाबाद आकाशवाड़ी से जुड़े और साथ ही विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ के रूप में भी उन्होंने हिन्दी की विशेष सेवा की। अंततः हिन्दी के प्रति उनका अमिट अनुराग उन्हें स्थायी रूप से साहित्य सृजन की ओर घसीट ले गया और तब से लेकर अंतिम सांस तक वह किसी न किसी रूप में साहित्य कर्म में सक्रिय रहे।

गद्य व काव्य दोनों विधाओं मे सक्रिय भूमिका अदा करने वाले डॉ0 बच्चन ने साहित्य संसार को अमूल्य कृतियां प्रदान की, जिनमें मधुशाला–1935, मधुबाला–1936, मधुकलश–1937, निशा निमंत्राण–1938, एकांत संगीत–1939, आकुल अंतर–1943, खादी के फूल–1948, मिनल यामिनी–1950, बुद्ध और नाच घर–1958, क्या भूलूं क्या याद करूँ–आत्मकथा1 1969, नीड़ की निर्माण फिर–आत्मकथा2 1970, प्रवास की डायरी–1971, एवं टूटी छूटी कड़िया–1973, सहित लगभग 60–70 गद्य व पद्य में दर्जनों मौलिक कृतियां हिन्दी साहित्य को सौंपी बल्कि अंग्रेजी, रूसी और अन्य कई भाषाओं के चुनिंदा साहित्य का हिन्दी में अनुवाद कर हिन्दी पाठकों के समक्ष विदेशी साहित्य को भी परोसा। उनकी कृती मधुशाला प्रचार की परचम तक पहुंची। इसके लिए उनकी आलोचना भी हुई।

मधुशाला जैसी कालजयी रचना को जन्म देने वाले 96 वर्षीय हरिवंश राय बच्चन 18 जनवरी 2003 रात 11.40 पर अंतिम सांस ली।

बच्चन की कुछ पंक्तियां

करले, करले कंजूसी तू
मुझको देने में हाला,
देले, देले तू मुझकों बस
यह टूटा–फूटा प्याला,
मैं तो सब्र इसी पर करता,
तूपीछे पछ्ताएगी।
जब न रहूंगा मैं तब मेरी
याद करेगी मधुशाला।
मेरे अधरों पर हो अंतिम
वस्तु न तुलसीदल, प्याला,
मेरी जिहवा पर हो अंतिम
वस्तु न गंगाजल, हाला,
मेरे शव के पीछे चलने
वालोंयद इसे रखना–
'राम नाम है सत्य' न कहना,
कहना 'सच्ची मधुशाला'
मेरे शव पर वह रोए, हो
जिसके आंसू में हाला,
आह भरे वह, जो हो सुरभित
मदिरा पीकर मतवाला,
दें मुझको वे कंधा, जिनके
पद मद डगमग होते हों
और जलूं उस ठौर, जहां पर
कभी रही हो मधुशाला
और चिता पर जाए उंड़ेला
पात्रा न घृत का, पर प्याला,
घंट बंधे अंगूर लता में,
मध्य न जल हो, पर हाला,
प्राण प्रिये, यदि श्राद्ध करो तुम
मेरा तो ऐसे करना–
पीनेवालों को बुलवाकर,
खुलवा देना मधुशाला
दुख का जिससे होता अंत
मिलती गोद बाद को तेरी
आएगी बारी कब मेरी
उसमें सोने की पा निद्रा अक्षत
और अनंत?

✍ रजनीश कुमार तिवारी 'राज'

दिल लूटने वाली ये निर्मोही कन्याएं

पहलेपहल जो जख़्म युवक के सीने पर लगता है, वह प्रायः किसी को नजर नहीं आता और लड़का या तो छत पर अकेला बैठा–बैठा मुसकराता रहता है या अपने पढ़ने के कमरे में कोर्स की किताब को छाती पर रख कर गुनगुनाता रहता है। इस दौरान वह बारबार बाल संवारता है, अपने चेहरे व कपड़ों की तुलना अपने पसंदीदा फिल्मी हीरों से करता है और घंटो आईने के सामने खड़ा रहता है।

फिल्मों और उपन्यासों के पात्रों की बात छोड़ दीजिए। अपने यर्थाथ जीवन में देखिए। कितनी प्रेमिकाओं ने अपने प्रेमियों से बेवफाई कर के महज पैसा, पद और बड़े घर के लालच में शादियां की है? साथ ही उन पुरूषों की भी गणना कीजिए। कितने प्रेमियों ने अपने पद, परिवार और प्रतिष्ठा की परवाह न करते हुए, अपनी प्रेमिका के लिए अपमान सहा और कष्ट उठाए।

इस विषय में आज तक कोई सर्वेक्षण शायद भारत में नहीं हुआ है, किंतु हमारा अनुमान है कि प्रेमियों से बेवफाई करने वाली प्रेमिकाओं का औसत, अपनी–प्रेमिकाओं से बेवफाई करने वाले प्रेमियों की बनिस्पत कम से कम 10 प्रतिशत अधिक है अर्थात् आज भी 60 प्रतिशत मामलों में बेवफा प्रेमिका ही होती है और 40 प्रतिशत पुरूष इस बात के प्रमाण के लिए विभिन्न समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में आने वाले उन पत्रों लिया जा सकता है, जो बेवफाई से पीड़ित प्रेमी और प्रेमिकाओं द्वारा लिखें जाते हैं। यहां तक कि विवाह के बाद भी पत्नियां, पतियों से अधिक 'बेवफा' होती देखी जा रही है।

हमें अपने एक मित्रा का किस्सा याद है। लगभग 3 वर्ष तक उस मित्रा की प्रेमिका उस के कसमेंवादे करती रही। दोनों की जातिबिरादरी भी ऐसी थी कि शादी हो सकती थी। मित्रा ने प्रेमिका के भाई को कम्प्यूटर के कोर्स का खर्चा दिया, अन्य हर तरीके से उस के परिवार की पूरी मदद की। प्रेमिका का परिवार गरीब था, परंतु हमारे मित्रा अपनी प्रेमिका के सौंदर्य और गुणों पर मुग्ध थे। एक दिन 'प्रेमिका' ने एक ऐसे लड़के से शादी कर ली, जो प्रतिष्ठा और पद में तो मित्रा से कनिष्ठ था, किंतु धनवान था। प्रेमिका ने अपने प्रेमी से अधिक धन को महत्व दिया। एक बहुत पुराना शेर है–

हम बावफा थे, इसलिए नजरों से गिर गए

शायद उन्हें किसी बेवफा की तलाश थी।

महानगरों में अगर लड़के फाऊंटेन पेन की तरह प्रेमिकाएं बदल रहे हैं तो लड़किया रूमाल की तरह

99%मुस्कराहट में मिला रहता है लाइफ लांग कैंसर नवयूवक रहे सावधान

किसी खूबसूरत नवयौवना से निगाहें टकराते ही किसी नौजवान के दिल में एक गुदगुदी सी उठती है और वह उस हसीना के प्यार का परवाना बन जाता है, परंतु शीघ्र ही उसे पता चलता है कि नयनवाण चलाना तो लड़कियों की पुरानी अदा है, लड़कों को उल्लू बनाने के लिए, तो फिर शुरू होता है गम और आंसुओं का सिल–सिला। कहीं आप भी ऐसी ही किसी बेवफा की चाहत में खुद को तो नहीं जला रहे?

आवश्यक सूचना

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

प्रेमी। कब कौन सी लड़की अपने प्रेमी का दिल तोड़ कर किसी गैर से शादी कर ले, पता नहीं, परिणाम यह हुआ है कि 'प्रेम' अथवा 'प्यार' जैसा हवा के सुखद झोंकें वाला शब्द बेजान खाद्य पदार्थ, 'इडली डोसा' जैसा बन कर रह गया है, जिसे दफ्तर या कालिज की कैंटीन में बैठ कर हर रोज 'नई' प्लेट में 'खाया' जाता है।

ये हंसीनाएं केवल प्रेमियों से ही नहीं, पतियों तक से बेवफाई से बाज नहीं आतीं, कई प्रेमिकाएं शादी के बाद प्रेमियों से आत्मिक 'लगाव' भी महसूस करती हैं, तो कई प्रेमियों को ऐसा पाठ पढ़ा देती हैं कि प्रेमियों के छक्के छूट जाते हैं। हमारे एक दोस्त एक बार बहुत डींगे मारते हुए अपनी शादी शुदा हो चुकी प्रेमिका के घर यह कह कर ले गए कि वह अब भी उन्हें उतना ही प्यार करती हैं, जितना की शादी से पहले करती थी। हम घर पहुंचे तो मित्र की प्रेमिका ने मित्रा का यह कह कर परिचय करा के कि 'देखो, तुम्हारे मामाजी आए हैं', मित्रा को उनकी स्थिति भी बता दी। प्रेमिकाओं के लिए भले ही यह शगल रहा हो या कुछ और, मगर हमारे उन प्रेमी मित्रा के दिल पर उस वक्त क्या गुजरी होगी, इस की तो कल्पना ही की जा सकती है। 90 प्रतिशत मामलों में विवाहित प्रेमिका अपने भूतपूर्व प्रेमी को या भुला चुकी होती है या भूल जाने का नाटक करती है। प्रेमिका के अपने दांपत्य

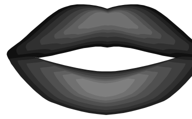

होठों पे प्यास

अतीक़ इलाहाबादी

सूरज था वो भी छुप गया अंधी गुफाओं में
रस्ता हमारा खो गया काली घटाओं में
फ़रियाद कोई सुनने को तैय्यार ही नहीं
ज़िन्दा पड़ा हुआ हूँ दहकती चिताओं में
भीगी हुई सड़क पे फिसलते हुए क़दम
फिर आज खींच लाये मुझे तेरे गाँव में
होठों पे प्यास ले के सभी देखते रहे
गंगा लिये हुए था वो अपनी जटाओं में
लोगों ने मुझको धूप के मंदिर में रख दिया
रहता था किस सुकून से बरगद की छाँव में
वो जिन्दगी की दौड़ में आगे निकल गया
काँटा जो चुभ गया था कभी मेरे पाँव में।

जीवन के लिए भले ही ऐसा करना उचित हो, लेकिन प्रेमी की स्थिति तो पुनर्मूषकों भव जैसी हो जाती है।

इसलिए अच्छा यही है कि दिल लूटने वाली इन लड़कियों से दिल लगाया ही न जाएं। ये चाहे लाख हाथपावं पटकें, आंखे चलाएं या आंसू बहाएं—इन से दूर ही रहें। दिल लगा लेना तो बड़ा आसान हैं, क्योंकि 2—4 मुलाकातों के बाद ही पुरूष सपने देखने लगता है, लेकिन बाद में आंसुओं और परेशानियों का जो सिलसिला शुरू होता है, वह थमाए नहीं थमता। प्यार तो सचमुच ही एक आग का दरिया है जिस में डूब कर जाना पड़ता है।

मगर हमारी इस सलाह के बावजूद, न प्रेमी मानने वाले हैं, न दिल लूटने वाली ये निर्मोही कन्याएं। बच्चन भले ही कह गए हो कि 'अब न रहे वो पीने वाले, अब न रही वह मधुशाला', लेकिन हम तो कहेंगे—

ओ बेवफा, बेवफाई तेरा उसूल होगी,
हम आशिक है, इंश्क से बेवफाई न होगी।

बधाई हो

दोस्तो बधाई हो। इस कालम के अन्दर आप अपने इष्टमित्रो, रिश्तेदारों, सहयोगियो इत्यादि को जन्मदिन / शादी शादी वर्षगांठ / होली / परीक्षा पास करने पर / नौकरी प्राप्त करने पर / प्रमोशन इत्यादि पर बधाई संदेश भेजना चाहते है तो आपको अपना संदेश, संदेश प्राप्त करने वाले व्यक्ति का पता व 25.00 रुपये मात्र देना होगा। अगर आप फोटो भी छपवाना चाहते है तो आपको 50.00रुपये व फोटो देना होगा। आपका संदेश पत्रिका में छपेगा और पत्रिका परिवार उस अंक को आपके द्वारा दिये गये पते पर डाक से भेजने की व्यवस्था करेगा।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं सहित ☎ 2025015

फैशन इम्पोरियम

23/22, कोठा पारचा, (नियर राम भवन चौराहा)

रेडीमेड गारमेन्ट के थोक एवं फुटकर विक्रेता

प्रो0 आर0सी0गुप्ता

धारावाहिक उपन्यास

दिल का पैगाम

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
एम.ए., एम0सी0ए0
प्रकाशित रचनाएं– विभिन्न पत्र एवं पत्रिकाओं में लेख, कविताएं प्रकाशित। आकाशवाड़ी के युवा मंच से जुड़ाव, रिर्पोटर जनमोर्चा हिन्दी दैनिक
सचिवः जी.पी.एफ.सोसायटी,
प्रांतीय महासचिव : राष्ट्रीय जनचेतना, उ0प्र0
प्रकाशनाधीनः लघुउपन्यास 'रोड इन्सपेक्टर एवं उपन्यास 'दिल का पैगाम', कविताएं 'यमुनापार के कवि'
सम्पर्क सूत्रः एल.आई.जी. 93, नीम सराय, कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद एवं एम–टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, धुस्सा पावर हाउस के पास, कौशाम्बी रोड, धुस्सा राजरुपपुर,
by lglcln बातचीतः2552444 सायं 3 से 7

अब तक आपने पढ़ा–

ऑठवी किस्त

0 अनिल व सावन बहुत ही घनिष्ठ मित्र है। अनिल की दोस्ती साथ पढ़ने वाली, लड़की अनु से होती है, तीनों कम्प्यूटर कोर्स करते है। अनिल और अनु की दोस्ती प्रेम का रुप ले लेती है, परन्तु एक–दूसरे का पता मालुम न होने के कारण दूरियां बन जाती है।

0 अनिल व सावन अनु के घर का पता ढूढने डा0 रेखा के घर जाते है। वहॉ सावन की मुलाकात मोना से होती है और वे एक दूसरे को दिल दे बैठते है।

0 अनिल, सावन, अनु, मोना, बबली और शालू पार्क में मिलते है। वहॉ शालू अनू से बताती है कि वह सावन से प्यार करती है। सावन अपने और मोना के बारे में अनू को बताता है।

0 सावन और मोना भविष्य की योजनाएं बनाते हैं वे कहते हैं कि हम ऐसा प्यार करेंगे जो आने वाली पीढ़ी के लिए मिसाल साबित हो। **और अब आगे....**

"उसका क्या हुआ सावन, बताओ न!" मोना के बार–बार दबाव डालने पर सावन बताता है–"मेरा एक बहुत ही प्यारा दोस्त था जिसका नाम विशाल था। हम दोनों लगोंटिया यार थे। पढ़ने में वह बहुत ही अब्बल दर्जे का था। वैसे भी बुद्धिमान, सुन्दर, स्मार्ट यानी सर्वगुण सम्पन्न था। वह बहुत ही सम्पन्न और इज्ज़तदार परिवार से ताल्लुक रखता था। उसकी दोस्ती हमारे साथ, हमारी कक्षा में पढ़ने वाली लड़की पूजा से थी। दोनों एक दूसरे को जी जान से चाहते थे। उनका प्यार देखकर लोग तरस खाते थे कि ये आगे क्या करेंगें? उनका एक साथ उठना, बैठना, खाना होता था। बस यूॅ समझ लो कि वे पैदाइसी एक दूसरे के थे। उन दोनों के घर वालों को भी इस पर एतराज न था। किन्तु कहते है– फूल मुरझाने के लिए होते हैं, और शूल चुभने के लिए।

फूल और शूल में फर्क कहो कितना है?
फूल और शूल में फर्क बस इतना है,
फूल खिलते हैं और मुरझा जाते हैं
मगर शूल चुभते हैं; कसकते हैं और याद आते हैं।

यही हाल पूजा और विशाल के प्यार का हुआ। समाज के कुछ दरिन्दों ने कली को फूल बनने से पहले ही उसकी खुशबू को मसल डाला। और खुशबू निकल जाने के बाद लोग फूल को फेंक देते हैं। अपनी खुशबू के साथ दरिन्दगी का बदला लेने के लिए जहर रुपी हवा में सॉसे ले रहा था। वह खुशबू को मसलने वालों से बदला अपने ही पौरुष से लेना चाहता था। धीरे–धीरे पॉच–छः महीने में अपने दिल पर पत्थर रखकर वह अपनी शिक्षा और शरीर दोनों एक मिसाल देने पर लग गया। फिर इण्टर की परीक्षा पास करने के बाद मेरे साथ ही यहॉ पर आ गया। किन्तु हम दोनों अलग–अलग रहते थे।

इसी नाजुक मोड़ पर उसे एक और खतरनाक मोड़ का सामना करना पड़ा। एक लड़की, जो न तो देखने में कोई सुन्दर, न ही पढ़ी–लिखी और न ही किसी अच्छे परिवार से ताल्लुक रखती थी, विशाल के आगे–पीछे चक्कर काटने लगी। विशाल पहले तो देखते ही अनदेखी करता रहा, मगर जब उसने देखा कि वह अपनी सहेलियों से राह चलते कहती कि–यह लड़का मुझसे प्यार करता है, मुझको बाते करने का बहाना ढूढ़ता है। लोगों के सामने ऐसे बाते करती मानों वह उससे बहुत ही दिनों से परिचित हो। वह उसकी बातों को सुनकर भौचक्का रह जाता। वह उसे विभिन्न प्रकार के सामान खाने के लिए लाकर देती। वह

0कहते है– फूल मुरझाने के लिए होते हैं, और शूल चुभने के लिए।
0 समाज के कुछ दरिन्दों ने कली को फूल बनने से पहले ही उसकी खुशबू को मसल डाला।
0ये भी सच है कि इंसान सोचता कुछ और है और होता कुछ और है।
0कहा भी गया है कि प्यार चाहे झूठा ही क्यों न हो, सच्चाई में बदल जाता है और उसे भूलना उसी तरह होता है जैसे रातो रात किसी गहरे घाव का भरना।

मन कर देता, पर उसके पड़ोस की एक भाभी उससे कहती कि–ले, लो। पर तुम खुद इससे मत बोलना। वह उसे देखकर एक से एक गाने गाती और उसे भिन्न–भिन्न प्रकार से तंग करती थी, कभी दरवाजा खटखटाती और कभी कहती कि कोई आया है या आपका खत आया है।

विशाल ने हारकर यह सोचा कि वह उसके मॉ–बाप से कहेगा, मगर समाज के डर से और दोस्तों की सलाह पर कि ये लोग तुम्हें ही गलत कहेंगे, तुम ही बुरे बन जाओगे और वह लड़की अपने को सही साबित कर लेगी। और हो सकता है कि जब कोई उससे पूछेगा तो वह नकार भी जाए। तब तुम फॅस जाओगे। उसके कुछ दोस्तों ने कहा कि तुम उससे प्यार करने का नाटक करो, पर उससे दूरी बनाये रखना और इसके लिए तुम उससे कहना कि बदनामी से बचने के लिए वह कम आये, कम दिखे और जब तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो जाए तो कमरा बदल देना।

विशाल को दोस्तों की राय अच्छी लगी। उसने ऐसा ही किया। उसने ऊपरी मन से उसकी सहेली से उस लड़की को, जिसका नाम बिट्टू था, घर बुलाकर "आई लव यू" कह दिया। मगर ये भी सच है कि इंसान सोचता कुछ और है और होता कुछ और है। यहॉ भी उसकी सोच के विपरीत हुआ। वह बेचारा पूरे मुहल्ले में बदनाम हो गयां उसे उस लड़की के कारण समाज से तमाम प्रकार के उलाहनों को झेलना पड़ा और विशाल उह–पोह की स्थिति में डुबकी लगाता रहा। विशाल को चारों ओर से नफरत मिलने लगी। पर उस लड़की पर इसका कोई असर नहीं हुआ।

विशाल को वे लोग भी ऑखें दिखाने लगे जो पहले उससे बातें करने में डरते थे। इंसान की एक कमी उसकी सभी अच्छाइयों को खाक में मिला देती है। वह बहुत ही चरित्रहीन लड़की थी। उससे पहले उसने न जाने कितने लड़कों से प्यार का नाटक कर उन्हें छोड़ दी थी। कोई सुबह का, कोई साम का, कोई साप्ताहिक तो कोई मासिक प्रेमी था। कुछ तो वार्षिक प्रेमी भी थे। कहते हैं कि एक गंदे तालाब में खिले हुए कमल के फूल से इसलिए नफरत नहीं की जाती है कि वह गंदे पानी में खिला है, बल्कि इसलिए नफरत की जाती है कि उसमें से खुशबू की जगह बू आने लगती है। विशाल प्यार करने के कारण बदनाम नहीं हुआ बल्कि इसलिए बदनाम हुआ कि वह एक चरित्रहीन लड़की से प्यार करता था। वैसे भी यह कहा गया है कि कीचड़ कीचड़ ही होता है चाहे वह सफेद कपड़े पर पड़े या रंगीन कपड़े पर। अन्तर सिर्फ इतना होता है कि सफेद कपड़े पर लगा कीचड़ सबको दिख जाता है, मगर रंगीन कपड़े पर पड़ा कीचड़ बहुत ही नजदीक से मालुम से होता है। यही बात विशाल के साथ लागू हुई। वह अपनी बदनामी की सोंच में अपनी पढ़ाई बर्बाद कर बैठा। वह एकदम टूटकर खोखला हो गया। इस बदनामी का दुष्परिणाम यह हुआ कि वह एक दिन इस संसार को छोड़कर चला गया। उसने अपनी इहलीला स्वयं समाप्त कर ली।

क्रमशः.........आगे पढ़िए...........

क्या होता उस लड़की हस्र?
क्या होता है सावन का हस्र?
अनिल और मोना की शादी होती है

गजल

ओ0एन0कुशवाहा

दुनियाँ दिले नादान! तेरे लिये नहीं
जीने के ये सामान, तेरे लिये नहीं।
ये हसीन वादियाँ, रंगीन ये नजारे,
महकी हुई फिजायें, तेरे लिये नहीं।
मस्ती भरा ये जाम, साकी भी डगमगाये,
छलकते हुये ये प्याले, तेरे लिये नहीं।
निखारा हुआ शबाब, बहकी हुई अदायें,
ये गेसुओं के साये, तेरे लिये नहीं।
जन्नत का ये ख्वाब, कयामत की जजायें,
'ओंकार' ये दुआयें, तेरे लिये नहीं।

सज्जन कुमार शुक्ल

विकास अधिकारी

भारतीय जीवन बीमा निगम

शाखाः प्रथम, कार्यालय देवरिया

फोटो डालना है।

नानी की चिट्ठी

विजय लक्ष्मी 'विभा'

"SS ओ माँ!"

"क्या है बेटी?"

"आज नानी की चिट्ठी आयेगी"

"तुझे कैसे पता?"

"देखो न माँ, अपने बारजे में कागा बोल रहा है।"

"हाँ, तब तो ज़रूर आयेगी। जा देख, डाकिया आता होगा। उसके आने का समय हो गया है।" मैंने तवे पर रोटी पलटते हुए सिर की बला टाली।

परन्तु बला इतनी आसानी से कैसे टलती। नन्ही जिज्ञासा जब बला बनती है तो उत्तर से भी प्रश्न निकला करते हैं। मेरी छह वर्षीय बेटी रानू ने मेरी पीठ पर अपने दोनों हाथों की कोहनियाँ टिका दीं और मेरे मुख की ओर झाँकते हुए प्रश्न किया–"माँ, तुम कागा को पाल क्यों नहीं लेती?"

"धत पगली, कागा भी कहीं पाला जाता है?"

"क्यों? क्या हुआ माँ। जैसे नीमसराय वाले बाबा के घर में तोता पला है, वैसे तुम भी एक कागा पाल लो न पिजरे में। कागा रोज़ बोलेगा तो रोज़ चिट्ठी आयेगी।"

"नहीं बेटी, तू नहीं समझती। कागा को पिंजरे में बंद कर दूँगी तो चिट्ठी कौन लायेगा?"

"अच्छा SS, तो नानी की चिट्ठी कागा ही लाता है माँ?"

"हाँ, वो लाकर डाकिया को दे देता है ओर डाकिया हमें दे जाता है। जा देख, डाकिया आता होगा।"– मैंने रानू से पीछा छुड़ाया।

"अच्छा, अभी देखती हूँ। आज तो चिट्ठी जरूर आयेगी।" और ताली पीटती हुई वह बाहर भाग गयी।

"मैं फिर रोटी बेलने में जुट गयी। परन्तु मन रोटीं की गोलाई में ही कहीं घूमने लगा था। अनायास ही मुझे सुभद्रा कुमारी चौहान की पंक्ति 'मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी।' स्मरण हो आयी। मैं भी कभी रानू की तरह एक बच्ची थी। आज इसकी माँ हूँ और कल यह रानू भी......। अजीब चक्र है सृष्टि का। अजीब व्यवस्था। रोटी गोल है, पृथ्वी–सूरज, चाँद–सितारे सभी गोल हैं। क्यों? जिंदगी भी तो इन्हीं की तरह गोल है। न जिंदगी में कहीं कोई मोड़ है, न ठहराव। बस यह एक परिक्रमा है, मौत के मंदिर की। संसार के अनगिनत प्राणी अनवरत दौड़ रहे हैं, इस परिक्रमा में। जो पीछे हैं वे हमें आगे दिखाई पड़ते है, जो आगे है वे पीछे हो जाते हैं। एक ओर आयु बढ़ती है तो दूसरी ओर घटती जाती है। मैं ही कभी रानू थी और यह रानू भी कभी मेरी तरह.........। ओफ़, मुझे भी एक दिन रानू को ससुराल भेजना होगा।"

"माँ SS, देखों माँ, नानी की चिट्ठी आ गयी"

विचारों का क्रम टूटा। मैं जैसे गहरी निद्रा से जाग कर रानू की ओर उन्मुख हुई। रानू अपने छोटे, कोमल हाथों में एक अन्तर्देशीय लिये मुस्कराती हुई साम़ने खड़ी थी।

"ला, देखूँ क्या लिखा है माँ ने"

"न, ऐसे नहीं दूँगी।" उसने लिफ़ाफ़ा पीछे छिपा लिया।

"तब कैसे देगी?" मैंने पूछा।

"जब ढ़ेर सारा प्यार करोगी।" उसने अधिकार जताते हुए उत्तर दिया।

"हूँ SS, तो आ, मेरे निकट आ।" चंचल रानू शीघ्रता से आकर मेरी गोद में बैठ गयी। मैंने आटा सने हाथों से उसके दोनों गाल थपथपाये और चुम्बनों की बौछार कर दी।

रानू खिलखिलाती हुई गोद से उठ खड़ी हुई और बोली, "पढ़ो न माँ, क्या लिखा है नानी ने?"

मैंने काँपते हाथों स अन्तर्देशीय खोला और उसे पढ़ने लगी। पढ़ते–पढ़ते मेरे नेत्र सजल हो गये। रानू मेरे चेहरे को पढ़ रही थी। अतीत की अनमोल स्मृतियाँ जो हृदय के किसी कोने में सो जाने का उपक्रम कर रही थीं, पत्र खुलने की आहट पाकर शिशु की भाँति कुलबुलाने लगीं। बबली, डाली, गुड़िया आदि मेरे शैशव के प्यार पगे नाम अब मम्मी, चाची, भाभी और बहू जैसे सम्बोंधनों के बोझ के नीचे कहीं दब गये थे। आज पत्र में माँ के द्वारा सम्बोधित 'गुड़िया' शब्द ने एक बार फिर मुझे बचपन की राहों पर दौड़ने के लिए आकुल कर दिया था। सच, कितना सुखद था वह जीवन, बिल्कुल रानू की तरह। मैं भी तो इसी तरह दौड़ कर माँ की गोद में पहुँच जाती थी। मैं हठ करती थी तो माँ प्यार से समझाती थीं। रूठती थी तो माँ मनाती थीं। छिप जाती थी तो माँ ढूढ़ा करती थी। सामने होती तो मुस्कराती और झिड़कियॉ देती थीं। खाना–खेलना और पढ़ना, ये ही तीन

नन्हीं जिम्मेदारियाँ थीं। न कोई चिन्ता न क्लेश। परन्तु आज, मैं माँ की भूमिका निभा रही हूँ और रानू मेरे बचपन की। कितनी कठिन है माँ की भूमिका। जैसे अतीत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों का पिटारा हों माँ का हृदय। पीछे देखती हूँ तो सुखद बचपन का चुम्बकीय आकर्षण। वर्तमान को देखती हूँ तो एक ठहराव की आवश्यकता, और भविष्य देखती हूँ तो बृद्धावस्था और अपने ही बच्चों की चिन्ताओं की रस्साकशी।

सच, विवाह के बाद लड़की का जीवन चिन्ताओं का अखाड़ा बन जाता है। तब भी माता–पिता विवाह के लिए परेशान रहते हैं। अजीब व्यवस्था है समाज की। जिस घर में लड़की जन्म से लेकर बीस–पचीस वर्ष तक खेलती–कूदती, पढ़ती–लिखती और बड़ी होती है, वही घर उसके लिए स्वप्न जैसा हो जाता है। वह घर, जिसकी दीवारें, मिट्टी और पत्थर तक सभी उससे प्यार करने लगते हैं। मिट्टी–पत्थर–हुँह, कहने की मिट्टी पत्थर हैं। इनसे अधिक सम्वेदनाशीलता किसमें होगी। बेटियों की विदाई पर ये पत्थर मोम बन जाते हैं। जब मेरी विदाई हुई थी, घर की दीवारें सांय–सांय कर उठी थीं। मेरी ही उम्र के, आँगन में लगे आम और नींबू मेरे वियोग के एहसास से सूखने लगे तो सूखते ही गये। जिस घर के वातावरण में हर शाम मेरा संगीत गूंजा करता था, वह वातावरण अब एक अव्यक्त खामोशी का व्रत ले चुका था।

"पढ़ो न माँ नानी की चिट्ठी। देखो, नानी ने क्या लिखा है। मुझे भी सुनाओ।" रानू ने मेरे सर को थपथपाते हुए फिर जिज्ञासा व्यक्त की।

"ओह, मैं तो भूल ही गयी कि तुझे भी सुनाना है। अच्छा रानू अब तो खूब पढ़ने लगी होगी। उससे कहना, नानी को चिट्ठी लिखा करे और छुट्टी होते ही अपनी नानी के पास आ जाये। नानी ढेर सा प्यार कहती है।"

मैंने मनगढ़न्त चन्द पक्तियाँ रानू को सुना दीं और प्रतिक्रिया जानने के लिए उसके मुख की ओर देखा। वह खुशी से नाच उठी थी। नन्हें हाथों से तालियाँ बजाती हुई बोली, "मैं नानी को चिट्ठी लिखूँगी। तुम लिखा दोगी न माँ?"

"हाँ लिखवा दूँगी, नानी को चिट्ठी लिखना तो अच्छी बात है।"

"तो अभी लिखवा दे न माँ," उसने हठ किया।

"अभी कैसे लिखवा दूँ? देखती नहीं, खाना बना रही हूँ। खाना बना लूँ तो लिखवा दूँगी। तब तक तू जाकर खेल।" मैंने कुछ तीखे स्वर में उसे झिड़क दिया।

"अच्छा माँ।" उछलती कूदती चली गयी। ध्यान फिर रोटी पर गया। तवे पर रोटी जलकर खाक हो गयी थी। धुँआ उठने लगा था। एक रोटी उरसे पर पसीज कर चिपक गयी थी। बचे हुए आटे पर पपड़ी पड़ गयी थी। मैंने तवे को साफ किया। उरसे की रोटी को बचे हुए आटे में मिलाया और थोड़ा पानी डाल कर आटे को ढीला करके लोइयाँ काट लीं। परन्तु विचार भी बच्चों से कम हठीलें नहीं होते। वे पुनः रानू की भॉति उछलते–कूदते उभर कर आ गये। मैं रोटियाँ बनाती रही। तभी न जाने कौन से अवांछित विचार तवे पर सिंकती रोटियों की भाँति मेरे मन को जलाने लगे। नैराश्य का धुआँ उठा और आँखे छलछला उठीं। पूरा वातावरण धुँध ाला–धुँधला–सा होने लगा। मेरा ध्यान फिर से माँ की चिट्ठी में अटक गया। माँ ने लिखा था।

"प्रिय बेटी,

"तेरे पत्र के इन्तजार में दिन काट रही हूँ। अपनी वृद्धा माँ को समय से पत्र लिख दिया कर। मैं जानती हूँ, तू घर–गृहस्थी में बहुत व्यस्त हो गयी है, परन्तु उसी व्यस्तता में माँ को पत्र लिखना भी जोड़ ले। शायद तू नहीं जानती माँ की ममता को, तभी तो महीनों पत्र नहीं लिखती। खैर, जैसी तेरी मर्जी। जिंदगी के चंद दिन कट ही जायेंगें। नारी को यह दुनिया माया कहती है, परन्तु माया नारी को ही सबसे अधिक सताती है, यह किसी को पता नहीं। अधिक क्या लिखूँ। प्रिय रानू को ढेर–सा प्यार। तेरी ही माँ"

मैंने आँसू पोंछते–पोंछते कब रोटियाँ सेंक डाली, कुछ पता नहीं। जैसे ही आटे की थाली में से लोई उठाने को हाथ बढाया, मुझे एहसास हुआ कि लोइयाँ खत्म हो चुकी हैं। मैंने चैन की सांस ली। हाथ ध ोये और अपने ड्राइंगरूम में आकर निढ़ाल हो गयी।

तब से लेकर आज तक पूरे बाईस वर्ष गुजर चुके हैं। आज रानू अपनी ससुराल में है। मैं नानी का पद ले चुकी हूँ। रानू अपनी इकलौती बेटी और दो नन्हें–मुन्नों के साथ अपनी ससुराल में व्यस्त हो गयी है।

मैं वर्षो से प्रतीक्षा कर रही हूँ कि वही संदेशवाहक कागा मेरे बारजे में आकर बोल जाय। परन्तु नहीं, अब वह क्यों आयेगा। नानी की चिट्ठी लाते–लाते वह भी तो बूढ़ा हो गया होगा।

रानू ने कहा था ' तुम कागा पाल लो न मॉ। वह रोज बोलेगा तो रोज चिट्ठियॉ आयेंगी।'

मैंने पिंजरा खरीद लिया है। अब रोज बारजे में दाना–पानी डाल देती हूँ कि कागा आ जाय तो उसे पिंजरे में बंद कर लूँ। सच, वह कागा रोज बोलेगा तो रोज मेरी रानू की चिट्ठी आयेगी। परन्तु लगता है, इन्तजार ही जिन्दगी है। अभी तक कोई कागा मेरे बारजे में नहीं बोला न हीं रानू की चिट्ठी आयी।

अज़ीज़ जौहरी "राष्ट्र सचेतक" सम्मानोपाधि से विभूषित

रेत की दीवार सी ज़िन्दगी हर एक की।
इसलिए चिन्ता रहे हर एक को हर एक की

ऐसी राष्ट्रीय एकता को समर्पित सशक्त काव्य पंक्तियों के रचनाकार कवि अज़ीज़ जौहरी, हिन्दी को समर्पित एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है जो तमाम विरोधों और मुश्किलों के बावजूद हिन्दी सेवा में अनवरत प्रयासरत हैं। आज जहॉ पूरा देश जातीय, प्रान्तीय व भाषायी विवादों में फंसकर प्रगति के पथ से विमुख विखंडनवादी अंधी गलियों की ओर मुड़ रहा है, ऐसे संक्रमण काल में राष्ट्र प्रेम के प्रति जन जन में चेतना जगाने का वीणा अब्दुल अज़ीज़ जौहरी ने उठा रखा है।

इलाहाबाद में जन्में 52 वर्षीय श्री अजीज जौहरी की काव्य पुस्तिका 'वतन है ज़िन्दगी' पर आचार्य श्री चन्द्र कविता महाविद्यालय एवं शोध–संस्थान हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश द्वारा "राष्ट्र सचेतक" सम्मानोपाधि से विभूषित किया गया है। काव्य कुलभूषण श्री जौहरी ने अपनी प्रखर लेखनी के द्वारा राष्ट्र की राजनैतिक एवं सामाजिक उथल–पुथल में राष्ट्र को टूटने–बिखरने से बचाने हेतु सतत् चेतनामय साहित्यि सृजित किया है तथा अपनी लेखनी के द्वारा देश भक्ति की अलख जगाये रखा है।

श्री जौहरी पिछले 20 वर्षो से हिन्दी की सेवा करते हुये कई हिन्दी संस्थाओं से भी जुड़े हैं। इनकी रचनाएँ आकाशवाड़ी के केन्द्रों तथा पत्र–पत्रिकाओं एवं राष्ट्रीय संकलनों में से प्रसारित व प्रचारित होती रहती है। धारा प्रवाह संस्कृत के शुद्ध उच्चारण के धनी श्री जौहरी इस बात से क्षुब्ध हैं कि सरकारी कार्यालयों में हिन्दी प्रयोग मात्र औपचारिकता बनकर रह गए हैं व सितम्बर के महीनें में ही राजभाषा के रुप में हिन्दी की पूछ होती है। श्री जौहरी गैरिज़न इन्जीनियर (वायुसेना) बमरौली के अधीन सीनियर इलेक्ट्रीशियन के पद पर कार्यरत हैं। उनके अच्छे कार्यो तथा हिन्दी प्रेम एवं उनकी देशभक्ति गीतों से प्रभावित होकर उनके चीफ इन्जीनियर (वायुसेना) बमरौली द्वारा प्रत्येक वर्ष 'हिन्दी दिवस' पर हिन्दी सेवा के लिए सम्मानित किया जाता है। प्रस्तुत हैं इनका एक मुक्तक इलाहाबाद पर–

सुबह की तरह ही है इलाहाबाद मेरा
मुँह धोनें का भी है एक अंदाज मेरा,
सूरज भी देख करके सोंचता है यारों
सभी शहरों से अलग है ये शहरा मेरा।

अज़ीज़ जौहरी

पी–315/8, साउथ कैम्प, एअर फोर्स कॉलोनी, बमरौली, इलाहाबाद–12

!! हिन्दी का गुणगान!!

सम्मेलन हिन्दी की सेवा करता है।
हिन्दी का गुणगान हमेशा करता है।।
भारत देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है
हिन्दी ही सबके माथे की बिन्दी है
सदियों से इन्सान नागरी पढ़ता हैं।।
हिन्दी की खातिर जो जीवन जीत हैं
हर हालत में वही अमिय तो पीते हैं
इसीलिए पारितोषिक उनको मिलता है।।
भारत को हिन्दी से जाना जाता है
मानवता से ही पहचाना जाता है
सम्मलेन का आदर भारत करता है।।
हिन्दी की सेवा से ही मोक्ष मिलता है
कीचड़ में ही फूल कमल का खिलता है
मन मेरा हिन्दी की पूजा करता है।।
हिन्दी पाण्डे श्याम कृष्ण की थाती है
सर से ले के पांव तलक महक आती है
सम्मेलन के वे ही कर्ता–धर्ता हैं।।
हिन्दी डॉ0 सत्य प्रकाश की महिमा है
हिन्दी साहित्य सम्मेलन की गरिमा हैं
कुर्ते की बॉहों में ठेंगा दिखता है।।
हिन्दी पंडित विभूति मिश्र की बोली है
माथे पर चन्दन है सूरत भोली है
जौहरी केवल महिमा गाया करता है।।
हिन्दी गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी की आँखें है
विश्व स्नेह समाज से भी झांके है
सारा हिन्दुस्तान इसे अब पढ़ता है।

हंसते रहो, मुस्कराते रहो। ऐसा मुख किस काम का जो हंसे नहीं, मुस्कराए नहीं।

पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य

सभी पाठको को गणतंत्र दिवस की बधाई

प्रो0 एम.एन.अकेला ☎:2413926

Smart Tailor

SPECIALIST IN SUIT & SAFARI
(सुट एवं सफारी के विशेषज्ञ)

एक बार आयेंगे विज्ञापन पढ़कर,
हजार बार आयेंगे सूट लेकर।

पता : 50, कोठापार्चा, डॉट के पुल के बगल में, इलाहाबाद–3

आओ सैर करें इंटरनेट की दुनिया में

इंटरनेट की शुरुआत अमेरिकी रक्षा विभाग ने 1960 में की। 1990 आते–आते इंटरनेट की लोकप्रियता काफी बढ़ गई। ज्ञान का यह अकूत भंडार कुछ लोगों के मनोरंजन का साधन बन गया और आज यह जीवन की एक आवश्यकता बन गया है। तेज गति नेट कनेक्शन के बिना हर एक को अपने काम–काज में तकलीफ होती है। इसकी मदद से अध्यापक अपना कार्य और विचारों का आदान–प्रदान दुनिया के किसी कोने में बैठे दूसरे अध्यापक से कर सकते हैं। वहीं, घर से मीलों दूर पढ़ रहे छात्र बगैर डाक टिकट और लिफाफे के अपने परिवार के संपर्क में रह सकते है।

आसान शब्दों में, इंटरनेट विश्व का सबसे बड़ा कम्प्यूटर सिस्टम है। दरअसल, इंटरनेट कई नेटवर्को का नेटवर्क है। नेटवर्क यानी सूचना के आदान–प्रदान और उपकरण बांटने के लिए आपस में जुड़े कम्प्यूटर्स का एक समूह। इंटरनेट हजारों छोटे–छोटे नेटवर्को को आपस में जोड़ता है ताकि एक नेटवर्क पर उपलब्ध जानकारी को सभी के साथ बांटा जा सके। विभिन्न नेटवर्क एक दूसरे से दिन–रात जुड़े रहते है। यदि इंटरनेट के किसी भाग में कुछ गड़बड़ हो जाती है, तो भी लक्ष्य तक पहुंचने के लिए जानकारी कोई दूसरा प्रत्यावर्ती रास्ता ढूंढ ही लेती है। इसी कारण इंटरनेट को इन्फॉरमेशन हाईवे या फिर साईबरस्पेस भी कहा जाता है।

इंटरनेट किसी एक संस्था या संगठन के स्वामित्व या अधिकार में नहीं होता। इसके द्वारा प्राप्त होने वाली सूचना पर सरकार या सेंसर के नियम लागू नहीं

होते। इंटरनेट का संचालन अनेक संस्थाएं और व्यक्ति करते हैं। इंटरनेट का कोई मुख्यालय नहीं होता। सबसे बड़ी बात इंटरनेट के जरिये प्राप्त की जा सकने वाली जानकारियों की कोई निश्चित सूची (इंडेक्स) नहीं होती। यानी यह नहीं मालूम होता कि फलां जानकारी फलां वेबसाइट पर मिल जाएगी। ऐसे में जिस विषय की जानकारी प्राप्त करनी होती है उसे सर्च इंजनों जैसे याहू, एओएल, खोज के जरिये प्राप्त किया जा सकता है।

ई–मेल

इंटरनेट का सबसे बड़ा फायदा यह है कि तुम दुनिया भर में अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और परिवार के सदस्यों यहां तक कि अजनबियों के साथ संदेशों का आदान–प्रदान कर सकते हो। ई–मेल के जरिए विश्व के किसी कोने में रहकर भी तुम सबके साथ बराबर संपर्क में रह सकते हों संपर्क स्थापित करने का यह बहुत तेज, आसान और तनावरहित तरीका है।

जानकारीः इंटरनेट के द्वारा किसी भी विषय पर जानकारी प्राप्त करना बेहद आसान है तुम जब चाहो समाचारपत्रों, पत्रिकाओं, शैक्षणिक पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, प्रसिद्ध भाषण, व्यंजन–विधियों, साहित्यिक व्यक्तियों के महत्वपूर्ण कार्यो को इंटरनेट पर ब्राऊज कर सकते है। इंटरनेट पर पर्यावरण, भोजन, हास्य, संगीत, फोटोग्राफी, राजनीति, खोल–कूद, टेलिविजन आदि विभिन्न विषयों पर हजारों साईट उपलब्ध हैं। इसमें मदद के लिए नेट पर मुफ्त प्रोग्राम भी उपलब्ध रहते हैं। इनमें से कुछ प्रोग्राम हैं–वर्ड प्रोसेसर्स, स्प्रेडशीट्स और तरह–तरह के खेल।

मनोरंजनः इंटरनेट पर सैकड़ो आसान, मनोरंजन खेल निःशुल्क प्राप्त किए जा सकते हैं। बैंकगैमन, चेस, पोकर, फुटबाल जैसे इन खेलों से तुम अपने साथ–साथ बड़ो का भी मनोरंजन कर सकते हो। तुम नई फिल्में ब्राऊज कर सकते हो। और हजारों टी.वी. थीम गीत और अन्य प्रकार का संगीत भी सुन सकते हो। सिर्फ इतना ही नहीं, विश्व के अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ तुम वार्तालाप भी कर सकते हो।

चर्चा समूहः इंटरनेट पर कई चर्चा समूह भी बने हुए है। यहॉ तमु अपने जैसे अन्य लोगों से मिल सकते हो। अपने इन नए मित्रों से तुम सवाल–जवाब कर सकते हो और उनसे नई रोचक बाते कर सकते हो।

महिलाओं के कानूनी अधिकार

ज्ञानेन्द्र सिंह
एडवोकेट, हाईकोर्ट

विवाह विच्छेद संबंधी कानून

जैसे–जैसे शिक्षा का प्रसार हुआ है, वैसे–वैसे मानव में अपना जीवन अपनी इच्छा के अनुसार जीने की आकांक्षा भी बढ़ती जा रही है। इस प्रकार वह स्वतंत्र रूप से जीवन जीने के लिए किसी भी बंधन में जीना नहीं चाहता और इस बंधन से मुक्त होने के लिए न्यायालय की शरण लेता है।

हिन्दू विवाह अधिनियम 1955 की धारा 13 के तहत 'कोई भी जिसका विवाह अधिनियम के पूर्व या पश्चात् हुआ हो', न्यायालय में विवाह विच्छेद के लिए प्रार्थना–पत्र दायर कर सकता है।

निम्न आधारों पर पति–पत्नी एक दूसरे से विवाह विच्छेद की डिक्री हासिल कर सकते हैं–

जारता: विवाह के पश्चात पति एंव पत्नी ने किसी अन्य व्यक्ति के साथ शारीरिक संबंध स्थापित किए हों।

निर्दयतापूर्वक व्यवहार: एक पक्षकार ने दूसरे पक्षकार के साथ शारीरिक एवं मानसिक रूप से निर्दयतापूर्वक व्यवहार किया हो। निम्न कार्यो को निर्दयता की श्रेणी में रखा गया है–

मारपीट करना, अभद्र गालियां देना, पत्नी को वेश्या कहकर पुकारना, जनसाधारण के बीच अपमानित करना, पत्नी पर जारता का झूठा आरोप लगाना।

अभित्यजन: विवाह के पश्चात्किसी एक पक्षकार द्वारा दूसरे पक्षकार को बिना किसी युक्तियुक्त कारण एवं उसकी इच्छा के खिलाफ साहचर्य से वंचित कर देना ही अभित्यजन है।

पति अथवा पत्नी द्वारा धर्म परिर्वतन कर लेना।

दूसरा पक्षकार कुष्ठ रोग से पीड़ित रहा हो।

पति अथवा पत्नी में से किसी को भी रतिजन्य रोगा हो।

दूसरा पक्षकार संसार त्याग कर संन्यासी बन गया हो।

पति एवं पत्नी में किसी एक का लगातार सात वर्ष तक लापता रहना। न्यायिक पृथक्करण की डिक्री पारित होने के पश्चात् एक वर्ष या उससे अधिक अवधि तक दोनों में सहवास नहीं हुआ हो। दाम्पत्य अधिकारों की पुनर्स्थापना (धारा 9) की डिक्री पारित होने के पश्चात्एक वर्ष तक दोनों में पति–पत्नी के संबंध नहीं रहे हों।

1976 के संशोधन के पश्चात पत्नी अब निम्न चार आधारों पर पति से विवाह विच्छेद की डिक्री प्राप्त कर सकती है–

1. अधिनियम से पूर्व बहुपत्नी विवाह अब भी पूर्णतया विधिमान्य हैं।धारा (13)(2)(1) के अन्तर्गत हिन्दू विवाह अधिनियम के प्रतिपादन के पश्चात्और याचिका प्रेषित करते समय यदि किसी हिन्दू के एक से अधिक पत्नियां जीतिव हैं, तो उनमें से कोई भी पत्नी विवाह–विच्छेद की याचिका प्रेषित कर सकती है।यह आधार तब ही उपलब्ध होगा, जबकि दोनों विवाह विधिमान्य हैं। इस भांति इस आधार के अन्तर्गत (क) हिन्दू विवाह अधिनियम के पूर्व सम्पन्न बहुपत्नीत्व विवाह की कोई भी पत्नी विवाह विच्छेद की याचिका प्रेषित कर दें और विवाह–विच्छेद की डिक्री प्राप्त कर लें, इस उपधारा के अन्तर्गत शर्त यही है कि याचिका प्रेषित करते समय दूसरी पत्नी जीवित हो। अतः दोनों पत्नियां एक साथ या कुछ अन्तराल से याचिका प्रेषित कर सकती है, आवश्यक केवल यह है कि दोनों याचिकाएं विवाह–विच्छेद की कार्यवाही में डिक्री मिलने के पूर्व प्रेषित की गई हो।

2. बलात्कार एवं अप्राकृतिक अपराध: इस आधार पर पत्नी अपने विवाह के पश्चात्पति द्वारा यह अपराध करने पर याचिका दे सकती है। विवाह के पूर्व यदि यह अपराध पति द्वारा किए गए हो, तो पत्नी विवाह–विच्छेद के लिए याचिका पेश नहीं कर सकती। भारतीय दण्डिक संहिता की धारा 377 के अन्तर्गत बलात्कार तथा धारा 377 के अन्तर्गत अप्राकृतिक कुकर्म दाण्डिक अपराध माने जाते हैं। इन तीनों में से किसी एक का भी यदि पति दोषी है, तो पत्नी विवाह विच्छेद के लिए अदालत में मुकदमा दायर कर सकती है। इन्हीं अपराधों में पत्नी के दोषी होने पर पति विवाह विच्छेद के लिए अदालत में मुकदमा दायर नहीं कर सकता। कोई भी

दूरदर्शन इलेक्ट्रानिक्स
53/38, भुसौली टोला, खुल्दाबाद, इलाहाबाद–211016
हमारे यहाँ सभी प्रकार की टी.वी.,डेक, ऑडियो, वीडियो और इलेक्ट्रॉनिक्स समानों की रिपयेरिंग की जाती है।
, प्रो0 हरिशंकर शर्मा

व्यक्ति यदि स्त्री की सम्मति के बिना शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करता है, तो वह बलात्कार का दोषी माना जाएगा। यदि सहमति बल या कपट से ली गई है, तो भी बलात्कार का अपराध बनता है। स्त्री यदि किसी भूल के कारण (जैसे दूसरे व्यक्ति को अपना पति समझ कर) सहमति दे देती है, तो भी बलात्कार का अपराध गठित हो सकता है, परन्तु कोई भी व्यक्ति अपनी वयस्क पत्नी के बलात्कार का अपराधी नहीं हो सकता है।

अप्राकृतिक कुकर्म का अपराध तब गठित होता है, जब कोई व्यक्ति किसी स्त्री या पशु से अप्राकृतिक ढंग से इन्द्रिय भोग करता है।

यदि दाण्डिक न्यायालय द्वारा पति को दण्ड भी मिला है, तो भी वैवाहिक कार्यवाही में पत्नी को स्वतंत्र साक्ष्य द्वारा पति का अपराध सिद्ध करना होगा। वह पति के दाण्डिक न्यायालय द्वारा दण्डित होने के आधार पर ही विवाह–विच्छेद की डिक्री प्राप्त नहीं कर सकती।

भरण–पोषण की डिक्री के पश्चात् सहवास का पुनः स्थापन न होनाः

पत्नी के लिए विवाह विच्छेद का यह नया आधार है। यदि किसी पत्नी ने दत्तक और भरण–पोषण अधिनियम की धारा 18(2) के अन्तर्गत भरण–पोषण की डिक्री प्राप्त कर ली है या दाण्डिक प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 125 के अन्तर्गत भरण–पोषण की आज्ञा प्राप्त कर ली है और एक वर्ष तक सहवास का पुनः आरम्भ नहीं हुआ है, तो पत्नी विवाह विच्छेद या न्यायिक पृथक्करण की मांग कर सकती है। इस उपबन्ध के अन्तर्गत केवल पत्नी को ही विवाह विच्छेद के लिए न्यायालय में जाने का अधिकार है, पति को नहीं।

M-Tech
(COMPUTER EDUCATION CENTRE)

बच्चों के लिए विन्टर कोर्स प्रारम्भ है।

इग्नू द्वारा संचालित :
एम.सी.ए, बी.सी.ए. सी.आई. सी., डी.सी.ओ,

डोयेक नईदिल्ली द्वारा संचालितः ओ लेवल, ए लेवल

एम.सी.आर.पी. विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा संचालित : पीजीडीसीए, डीसीए एवं **अन्य कोर्सेस** : टैली, जॉवा, विजूअल बेसिक, आटो कैड, सी++,3डी होम, ओरेकल, इंटरनेट

कम्प्यूटर द्वारा कुन्डली, जॉब वर्क, प्रोजेक्ट वर्क,विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, थीसीस

सम्पर्क करेः

0 एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर,
कौशाम्बी रोड, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

शाखाः एल.आई.जी 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

शाखाः एम.टेक. कम्प्यूटर सेन्टर, चाचकपुर रोड, सिपाह, जौनपुर

4.विवाह का निराकरण : पत्नी के लिए विवाह विच्छेद का एक नया आधार है यदि स्त्री का विवाह 15 वर्ष से कम आयु में कर दिया गया था और उसने 15 वर्ष की आयु प्राप्त करने के पश्चात्परन्तु 18 वर्ष की आयु प्राप्त करने से पूर्व अपने विवाह का निराकरण कर दिया है, तो वह विवाह विच्छेद के लिए अदालत में याचिका दे सकती है। यहां यह कहना सुसंगत होगा कि विवाहेतर शारीरिक संबंध का होना या नहीं होना महत्व नहीं रखता है।

भारतीय समाज में बाल विवाह होता है तथा 12–15 वर्ष की आयु तक विवाहेतर शारीरिक संबंध भी हो जाता है। इसका होना न होना उस बालिका पर निर्भर नहीं है। हो सकता है कि 18 वर्ष की आयु तक पहुंचते वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि विवाह बन्धन में बंधे नहीं रहना चाहती, तो धारा 13(2) उसे अधिकार देती है कि वह विवाह विच्छेद का मुकदमा दायर कर दे। इस धारा के अन्तर्गत यह आवश्यक है कि : 1. पत्नी का विवाह 15 वर्ष की आयु प्राप्त करने से पूर्व हुआ था और 2. 15 वर्ष की आयु प्राप्त करने के पश्चात्और 18 वर्ष की आयु प्राप्त करने से पूर्व उसने विवाह का निराकरण कर दिया है। कुछ उच्च न्यायालयों का मत है कि इस आधार पर याचिका 18 वर्ष पूरे होने के पश्चात्भी प्रेषित की जा सकती है।

तलाक प्राप्त करने के यह सभी विशेष अधिकार महिलाओं को दिये गये है।

ljdkj }kjk ekU;rk izkIr ljdkj }kjk ekU;rk izkIr

स्नेंहागन कला केन्द्र

,y-vkbZ-th- 93]uhe ljk; dkWyksuh] eq.Msjk] bykgkckn

0 flykbZ 0 d<+kbZ 0 iasfVx 0 dEI;wVj 0 C;wfVf'k;u

0 baxfy'k Liksdsu 0 अन्य प्राफेसनल कोर्सेस एवं व्यवसायिक कोर्सेस

uksV% gekjs ;gkW vuqHkoh v/;kidks }kjk Vs ªfuax dh O;oLFkk gSA

आदर्श हो, तो कैसा?

ऐसी कुछ पत्रिकाएं हैं जो कैरियर पर श्रृंखला चलाती है। जब वे किसी विशेष क्षेत्र पर आलेख लिखती हैं तो उस क्षेत्र के सफल व्यक्ति का एक साक्षात्कार भी देती है। ताकि वे युवाओं के सामने ऐसे व्यक्ति को आदर्श की तरह पेंश कर सकें, जो विशेष हो और उदाहरण की तरह जिसका अनुकरण किया जा सके।

पत्रिकाओं के अलावा भी हम ऐसे लोगों को जानते हैं जिन्होनें स्वयं की अलग पहचान बनाई है। हम जिनकी प्रशंसा करते हैं, उनकी भांति बनने की भावना अपने में पैदा कर सकते हैं। हम चाहे तो आइजन हावर या फील्ड मांटगुमरी की तरह सेनानायक हो सकते हैं या पिकासो की तरह कलाकार या मार्तिना नवरातिलोवा की तरह टेनिस स्टार या जुबिन मेहता की तरह संगीतकार।

आप भाग्यशाली है यदि आपको परिवार में ही अपना आदर्श व्यक्ति मिल जाता है। हमारे बीच कुछ ऐसे भी भाग्यशाली लोग होते है जिनके परिवारों में राष्ट्रीय या अंतराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धियां हासिल करने वाले आदर्श व्यक्तित्व है। हममें से अनेक लोगों को याद होगा कि लार्ड माउंटबेटन की मृत्यु राजकुमार चार्ल्स के लिए गहरा धक्का साबित हुई, क्योंकि अंकल डिकी नौजवान राजकुमार के लिए एक आदर्श व्यक्तित्व, दार्शनिक और मार्गदर्शक थे।

कई बार लोग बिना सोचे समझे अपने आदर्श बना लेते हैं। स्कूलों में ऐसी लड़किया होती हैं जो टीवी पर आने वाली समाचार वाचिकाओं की तरह हाव–भाव और उच्चारण अपना लेती है। सड़को पर अकसर ऐसे नौजवान मिल जाएंगे जो फिल्म अभिनेताओं की तरह हेयर स्टाइल अपना लेते हैं। संभवतः इस तरह के आदर्श गंभीर और लंबे समय तक चलने वाले नहीं होते हैं। हर व्यक्ति अपने आदर्श व्यक्तित्व का साक्षात उदाहरण देखना चाहता है, जिसेसे कि यह पता चले कि यदि वह आदर्श व्यक्तित्व का साक्षात उदाहरण देखना चाहता है, जिससे कि यह पता चले कि यदि वह आदर्श का अनुकरण करेगा तो स्वयं किस तरह का व्यक्ति बनेगा।

आदर्श व्यक्तित्व का चयन व अनुसरण करने के लिए युवावस्था उपयुक्त समय है। एक होशियार युवक अपने आदर्श का उपयोग कुछ परिवर्ततनों के साथ करता है। यह सुधार या परिवर्तन उसे अपनी विशेष परिस्थितियों वातावरण और हल ही में हुए परिवर्तनों की वजह से करना पड़ता है। **क्रमशः........**

विश्व हिन्दु महासंघ

सप्तम विश्व हिन्दु महासम्मेलन, गोरखपुर

दिनांक 13, 14 एवं 15 फरवरी,2003

योगी आदित्यनाथ संसद सदस्य

अध्यक्ष : आयोजन समिति एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष,
विश्व हिन्दु महासंघ–भारत
श्री गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर

निवेदकः

प्रमोद सिंह
जिला संयोजक
अखिल भारतीय हिंदू महासंघ
देवरिया–कुसीनगर, उ0प्र0

गिरिराज दूबे
एवं समस्त हिन्दू युवा वाहिनी

डॉ0 कुसम लता मिश्रा

कहानी

"कन्या रत्न"

अनुभा मुझसे कह रही थी! अब मेरे से काम होता नहीं कहीं जाने का मन भी नहीं करता, सुनो! मेरे मोहित की शादी कहीं करा दो। शादी करा दो? मैं तुरंत दुहरा उठी, "अनुभा दो–दो पुत्र रत्नों की मॉ हो गई तुम्हें तो नाज होना चाहिये पुत्रो पर तुम्हारे यहां तो लड़की वाले स्वयं चलकर आयेंगें भई मैं उसकी अर्न्तवेदना से कोसो दूर चहकते हुये बोल पड़ी। हमेशा की तरह प्रश्नवाचक सी?

लम्बी सांस लेते हुये उदास, बुझे मन से अनुभा बोल पड़ी। तीस पार करने जा रहा है रोहित सुमन! धन दौलत की कोई कमी नहीं मेरे पास पूरे–पूरे दिन टी.वी. देख–देख कर शोर कर के मुझे हलाकान करते रहते हैं। साथी दोस्तों को चाय नाश्ता बना कर अलग मुझे ही देना होता है। पढ़ना लिखना तो कोसों दूर है। सोहित भी बिगड़ता चला जा रहा है। जब देखो बाईक लेकर चल देगा। बेसमय धमक पड़ेगा। रसोई में खड़े होकर चिखेगा, यही बनाया है क्या खाना है छीं........ मैं तो सिर पकड़ कर बैठ जाती हूँ, असमंजस में पड़ी घुट रही हूँ। पापा तो बोलना ही नहीं चाहते गूंगे हो गये है। घर की हंसी वर्षो से लगता है कि किसी ने चुरा ली। मैं अवाक् सी ऑखे फाड़े उसकी बातें उसके हाव भाव देख सुन निस्पंद सी हो रही थी।

वह कहे जा रही थी इन बच्चों को तो कहीं सरकारी या प्राइवेट नौकरी भी मिलनी मुश्किल है कौन हमारे घर आकर अपनी कन्या देगा। कोई शगल है इनके पास। जब ये पैदा हुए तो हम लोग फूले नहीं समाये थे। इन्हें लाड़–प्यार में कहीं का नहीं रखा, तुम किसी ब्राहमण गरीब कन्या बताओं हम लोग बिना कुछ लियें दिये अपनी बहू बनान चाहते हैं कम से कम कोई करले घरने वाली, इनके आने जाने पर रोक टोक तो लगायेगी तो शायद ये सुधर जायें। मेरा घर–घर हो जाये। अब मुझे तो तुम देख ही रही हो हमेशा इन लोगों की चिन्ता खाये जा रही है बुखार

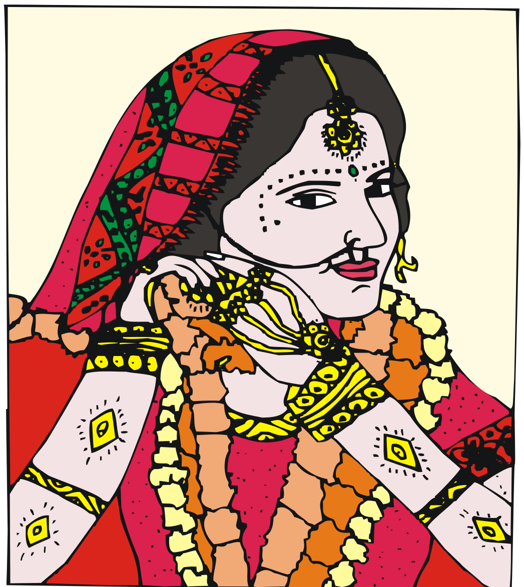

बना रहता है।

मेरे कन्धें थपथपाती हुई अनुभा लगातार बोले जा रही थी किन्तु मेरी चेतना तीस वर्ष पार उन बीतें क्षणों में जा पहुंची जो बड़े मर्मान्तक थे। मैं उन क्षणों में सहसा जीने लगी तब फोन की सुविधा नहीं थी मैं कन्या जन्म देकर दुखी थी एक भावना की पुत्र होता तो मेर मान होता बस इतना ही। मैं अपने मां के घ ही थी मेरे खाट पर आसमानी रंग का एक अंतर्देशीय पत्र पड़ा था जब धीरे से करवट बदल कर उसे उठाना चाहा अचानक कमरे में प्रवेश करती मां बोल उठी–बेटा ये निलेश का पत्र अभी थोड़ी देर पहले ही आया था।

मैंने मां की ओर देख और पत्र हाथों में लेकर धीरे से बैठ गई। अकचका कर बच्ची रो पड़ी मैंने उसे धीरे से गोद में उठा लिया और पत्र खोलने लगी आज सौर में सातवां दिन था कमजोरी बहुत थी–मां आगे बढ़कर बोल पड़ी तुम पढ़ों नहीं ऑखें थक जायेगी लाओ मैं पढ़ देती हूँ मैंने इशारे से सिर हिलाकर कहा ठी क है और पत्र पढ़ने लगी।

प्रिय सुमन

ढेर सारा प्यार मन को गहरी शान्ति मिली। पल भर में सारी पीड़ा छू मन्तर हो गई थोड़ा रूक कर मुस्कराते हुये दूसरी पंक्ति पर निगाहें सरकने लगी। तुम कैसी हो? मै। ठीक हूँ। यहां 'अनुभा' को 'पुत्र–रत्न' की प्राप्ति हुई है। मेरे कलेजे पर कटारी चल गई, ,अगली पक्ति हिम्मत करके फिर पढने लगी। परसों बरही है सब बहुत प्रसन्न है तुम्हारा सुनकर लोग बहुत दुखी थे कि पहली लड़की हुई है खैर ....। यहां रात रात भर गाना बजाना मिठाईया लड्डू रोज ही बाटे जाते ....। आगे शब्द धुधलाने लगे आसूं पोछ कर मैं पुनः पत्र पढ़ने लगी अगले सप्ताह में आ रहा हूँ माता जी कह रही थी कि लड़की हुई है तो क्या भेजना वह तो स्वयं खर्च बन कर आई है। काश ये पक्तियॉ इन्होंने न लिखी होती–मैंने बच्ची को छाती से चिपटा लिया जैसे वह कहीं मुझसे दूर न चली जाये प्यार का ज्वार मेरे हृदय में उफन आया और मैं सिसक उठी ....।

अरे! अरे! सुमन भई रोओं नहीं यहा तो मेरा दुख है और एक सहेली ही दूसरे का दुख समझती हैं। मैं चेतन हो उठी; अपने अतीत से जाग वर्तमान में जी उठी। आंसू पोछ डाले अनुभा की हथेली अपने हाथों में रख उसे सात्वना के भाव भर सहला उठी।

मैं सोच रही थी तीस वर्ष पूर्व कितनी सुन्दर हुआ करती थी अनुभा। मखमल पर टाट के पेबन्द सी लगती थी मैं उसके साथ। किन्तु आज सब कुछ उलट पलट गया कैसे? मुर्झाई हुई सी अधपके बाल, विरल दंत पक्तियॉ, जीवन से निराश, बुझी आखें। चमकता चंदन सा देह धूप छाही जैसा निस्तेज, कितु बातें अनवरत हुई। अनुभा मुझे बस ऐसी ही कही कि "औरत के बस रहै न चतू पुनि–पुनि कहै आपनौ हेतु"

मैं सुनती जा रही थी हू, हा कर रही थी। सुमन तुम कितनी स्मार्ट हो गई हो लगता ही नहीं कि तुम्हारें नाती पोते हो गये हैं। बिल्कुल जवान लगती हो ताजा। अपने पुराने अदाज में बोल उठी अनुभा तुम्हारी तो काया कल्प हो गई, क्या करती हो। बस मुझे खोया तीस वर्ष पूर्व का पारितोजिक मिल गया। मगन हो उठी मैं मुस्करा उठा मेरा रोम–रोम ये सब मेरी कन्याओं का किया धरा है। गर्व से बोल पड़ी मैं बड़ी ससुराल है कान्वेन्ट स्कूल चलाती है। छोटी एम.बी.बी.एस. की तैयारी में जुटी है बस एक बेटा है वह इजीनियर है। मेरी देख भाल मेरी बेटियां करती है। ससुराल से बड़ी हमेशा फोन करती है मम्मी अपना ध्यान देना, दमाद तो जैसे बेटे से भी बढ़कर ध्यान देते है। छोटी तो जरा सी पड़ी बिस्तर पर पड़ी तो चाय बनाना, रोटी सेंकना और सिर मल देना मैं तो निहाल हो उठती हूँ। अनुभा बोल पड़ी तुम्हें ईश्वर ने दो–दो कन्यारत्न दिये हैं मेरे तो पत्थर निकले। शायद कोई कन्या रत्न ऐसी मिले जो मेरे पत्थर बेटों को पारस बना दें। कह उसने मुझे चूम लिया।

और मैं पंखो पर विचरने लगी सारी कलुस कालिमा आज स्वर्ण सी चमक उठी।

चना पड़ी

श्रुति त्रिपाठी

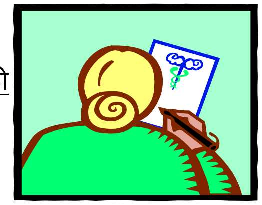

सामग्री : 500 ग्राम काबूली चना, लौंग, अनार दाना, सोडा नमक, गर्म मसाला, अदरक, मिर्चा, टमाटर, प्याज, धनिया

विधि :रात को काबूली चना पानीमें भिगों दे। सुबह धोकर प्रेशर कुकर में रख दे, पानी के साथ नमक मिलाकर डाले। 4–5 लौंग, अनार दाना, सोडा डालकर कुकर बन्द कर दें। आंच पर चढ़ा दे। तीन चार सीटी आने पर उतार लें। चना ज्यादा न गलने पाये।

अदरक को लम्बा और पतला काट लें। मिर्चा में लम्बा और पतला काट ले।

कुकर खोल कर चने से पानी अलग कर लें। पानी फेंके न। चने में अदरक, मिर्चा डाल दे। चने के ऊपर गर्म मसाला डाल दे।

तेल और घी देशी बराबर मात्रा में लेकर कढ़ाही मे गर्म करें। खूब गर्म होने पर तेल को कुकर में डाल दें। चने से निकाला हुआ पानी थोड़ा सा कुकर में डाल दें। कुकर को बिना ढक्कन के चढा दे। अच्छी तरह से चलाते रहे जब तक पानी सूख न जाय।

पकने के बाद उसे गर्म–गर्म प्लेट में निकाले सजाने के लिए प्याज, हरी ६ ानिया, टमाटर से सजाकर पेरा करे।

प्रिय पाठिकाओं इस बार से हम यह एक नया स्तम्भ प्रारम्भ कर रहे हैं यह स्तम्भ हमारा कैसा लगा हमें अपने विचार पर अवश्य लिखें। अगर आप किचेन से सम्बंधित कुछ और जानकारी रखती है तो हमें भेंजे। **संपादक**

हताश क्यों! हताश क्यों! हताश क्यों!

हताश क्यों!

गुप्त रोग का ईलाज अब
बिल्कुल आसान

यदि आप **शादी से पहले या शादी के बाद** किसी भी प्रकार के गुप्त रोग जैसे **नपुंसकता, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, धातुरोग, पेशाब में जलन, कमरदर्द, कमजोरी, टेढ़ापन, खड़ा न होना** आदि रोगों से परेशान है। जगह–जगह इलाज करवाके सफलता न मिली हो तो आज हमारे गुप्त रोग **विशेषज्ञ डा. जी0एन0 दूबे एवं डा0 आर0 के0 तिवारी** अगले माह से आपके क्षेत्र देवरिया में बैंठेगे।

दाउजी क्लीनिक

सिविल लाईन्स, गोरखपुर रोड,
देवरिया, यू0पी0

डा. जी.एन.दूबे

माह फरवरी एवं मार्च के व्रत, त्योहार एवं साईत

● पं0 शम्भू नाथ मिश्रा

5 फरवरी, बुद्धवारः चतुर्थी–वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी

6 फरवरी, गुरूवारः –बसन्त पंचमी, तक्षक पूजा, वसन्त रति काम महोत्सवः। सरस्वती पूजनम।

7 फरवरी, शुक्रवारः रवि योगः। अमृते सिद्धयोग– 9.48 मिनट तक। सर्वार्थ–सिद्ध योग 9.48 के बाद। सभी कार्यो में शुभ परन्तु यात्रा के लिए ठीक नहीं है।

8 फरवरी शनिवारः सप्तमी, अचला सप्तश्री व्रतम्।

10 फरवरी सोमवारः नवमी, महानन्दा नवमी। रवियोग–सभी कार्यो के लिए शुभ सांय 5.21 बजे के बाद।

12 फरवरी बुद्धवारः एकादशी, बकरीद, रवि योग। सभी कार्यो के लिए शुभ रात्रि 9 बजे तक।

13 फरवरी गुरुवारः एकादशी, प्रातः 7.25 बजे तक। जया एकादशी व्रतम्।

14 फरवरी शुक्रवारः द्वादसी, प्रातः 7.25 बजे तक। एकादशी व्रतस्य पारण प्रातः 7. 25 तक। प्रदोष व्रत। सभी कार्यो के लिए सिद्ध योग। रवियोग रात्रि 10.46 बजे के बाद।

15 फरवरी शनिवारः त्रयोदशी, रवियोग रात्रि 10.54 तक। सभी कार्यो के लिए शुभ।

16 फरवरी रविवारः चतुदशी/पूर्णिमा, भद्रा सुबह 6.35 से सायं 6 बजे तक। स्नानदान व्रतादौ पुर्णिमा।

20 फरवरी गुरूवारः चतुर्थी, संकष्ठी श्री गणेश चतुर्थी व्रतम। चन्द्रोदय रात्रि 9.32 बजे।

24 फरवरी सोमवारः अष्टमी, सर्वार्थ सिद्धयोग प्रातः 6.33 से 11.29 तक सभी कार्यो के लिए शुभ।

27 फरवरी गुरूवारः एकादशी, विजया एकादशी व्रत।

28 फरवरी शुक्रवारः द्वादसी, एकादशी व्रत पारण 6.45 बजे तक। प्रदोषव्रत। सर्वार्थ सिद्धयोग दि0 8.23 के बाद।

मार्च

1 मार्च शनिवारः त्रयोदशी, भद्रा 6.21 के बाद सायं 6.25 तक। महाशिवरात्रि व्रत।

3 मार्च सोमवारः सोमवती अमावस्या।

7 मार्च शुक्रवारः चतुर्थी, वैनायिकी श्रीगणेश व्रत। दिन में 1.44 के बाद सभी कार्यो के लिए शुभ।

10 मार्च सोमवारः सप्तमी, होलाष्टका। रात्रि 6.33 बजे तक सभी कार्यो के लिए शुभ।

14 मार्च शुक्रवारः एकादशी, भद्रा दिन में 9.51 से रात्रि 9.54 तक।आमलकी एकादशी व्रत। रंगभरी एकादशी। मुहर्रम ताजिया।

15 मार्च शनिवारः द्वादसी, वसन्तऋतु।

16 मार्च रविवारः त्रयोदशी, प्रदोष व्रत।

17 मार्च सोमवारः चतुर्दशी, भद्रा सांय 6. 21 से रात्रि 5.25 तक। भद्रा पुच्छे होलिका दाह रात्रि 1.3 से 2.15 बजे तक। व्रत पुर्णिमा। चौमासी चौदह। जैन धर्म के लिए।

18 मार्च मंगलवारः पूर्णिमा, स्नान दानादौ पूर्णिमा। काश्य होली। चैतन्य महाप्रभु जयन्ती।

19 मार्च बुद्धवारः एकम्, काशी तोडनत्र होली। होलिका विभूति धारणाम। होलिकोत्सव। सभी कार्यो के लिए शुभ रात्रि 2.1 बजे तक।

21 मार्च शुक्रवारः भद्रा दिन में 9.39 बजे तक। संकण्ठी श्री गणेश चतुर्थी व्रत।

25 मार्च मंगलवारः अष्टमी, बुढ़वा मंगल उत्सव। श्री शीतलाष्टमी।

28 मार्च शुक्रवारः एकादशी, पापमोचनी एकादशी व्रत। सायं 4.19 तक सभी कार्यो के लिए शुभ।

30 मार्च रविवारः त्रयोदशी, प्रदोष व्रत। महाशिवरात्रि व्रत। ❍

समय पर मासिक पत्रिका “विश्व स्नेह समाज” अब आपके दरवाजे पर

सदस्यता फार्म

मैं श्री/मि0/श्रीमती .... पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री .... निवासी .... व्यवसाय .... फोन न0 मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज का वार्षिक/द्विवार्षिक/ पंचवर्षिय/आजीवन सदस्य बनना चाहता हुँ। इस हेतु रुपये .... मात्र शब्दों में ...... नकद/डीडी/मनिआर्डर/ से भेज रहा हूँ/ रही हुँ। **नोटः** 1. निवासी की जगह पर पत्र व्यवहार का पता ही लिखे। 2. पत्रिका डाक से देर से मिलने पर पत्र के माध्यम से अवश्य सूचित करें। हम आपके लिए दूसरी प्रति भेजने का प्रयास करेंगे।

भारत में मूल्य वार्षिक (साधारण डाक से) रु050/00, **विदेशों में** (नेपाल व भूटान को छोड़कर) साधारण डाक से रु0 150.00, **आजीवन सदस्य** : रु0 1100.00 भुगतान का माध्यम चेक/ मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट। इलाहाबाद से बाहर चेकों के लिए रु0 20.00 अतिरिक्त राशि देय होगी।

कृपया चेक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें।

विज्ञापन प्रबंधकः मासिक पत्रिका “**विश्व स्नेह समाज**”, एल.आई.जी.–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

जरा हंस दो मेरे भाय

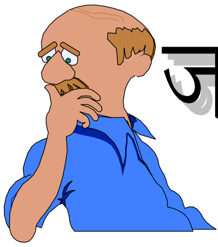

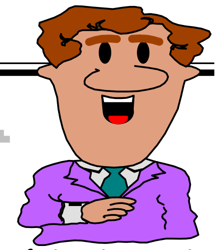

पति–पत्नी

पतिः मैं तुम्हारी वर्षगांठ के अवसर पर तुम्हें उपहार देने के लिए यह मोतियों का हार लाया हूं।
पत्नीः लेकिन मैंने तो कार के लिए कहा था।
पतिः हां, कहा तो था। पर क्या करूँ, बाजार भर में कहीं नकली कार मिली ही नहीं।

पत्नी की पति की रेस खेलने की आदत पंसद नहीं थी, इसलिए पत्नी से छुपकर पति महोदय ने घोड़े पर पैसा लगाना शुरू किया। एक दिन उनका दोस्त आया और बातों–बातों में पूछने लगा–कहो भाई, कल रानी के मामल
यह सुनते ही पत्नी ने गुस्से से पति की ओर देखा और बाहर चली गई।
पति दोस्त से बोलाः तुमने तो सारा मामला ही चौपट कर दिया। मैंने बड़ी मुश्किल से पत्नी को विश्वास दिलाया था कि मैं अब रेस नहीं खेलता। अब तुम कोई उपाय निकालो।
इतने में पत्नी वापस आ गई तो दोस्त ने सफाई पेश की–भाभी, मेरी बात का आप गलत मतलब न निकालना। रानी किसी घोड़ी का नाम नहीं है, वह तो इसके आफिस की टाइपिस्ट का नाम है।

हमनें मीना के लिए जो लड़का पसंद किया है, वह वैसे तो ठीक है, खिलता हुआ रंग, ऊंचा कद। पर एक कमी खटकती है–पत्नी ने कहा।
पति ने पूछा–वह क्या?
पत्नी ने बताया–लगता है तुमने ध्यान नहीं दिया। जब वह हंसता है तो उसके बड़े–बड़े दांत बाहर आ जाते है और तब वह खराब लगता है।
पति ने कहा– अजी छोड़ो भी। मीना से शादी तो होने दो फिर उसे हंसने का मौका कहां मिलेगा?

ममता क्लिनिक

डॉ0 शंकर मिश्रा (B.Sc, B.A.M.S)

क्या आप अपने खराब स्वास्थ्य से चिंतित है?
अधिक वज़न से परेशान है? कम वज़न से परेशान है?
थकान रहती है? तनाव अधिक रहता है?
इन सबका इलाज

100% गारण्टी के साथ मिले।

कोई साइड इफेक्ट नहीं।

पता : डॉ0 शंकर मिश्रा
69, शिवकुटी, गोविन्दपुर चौराहा के पास, इलाहाबाद
23 फोन ☎ : 0532–2541601

अन्य

नौकरः हुजूर! मैं अब आपके यहां काम नहीं करूंगा। आज ही मेरा हिसाब कर दीजिए।
मालिकः क्यों? क्या हुआ? क्या तकलीफ है तुम्हें यहां?
नौकरः साहब, बात यह है कि बेगम साहिबा का व्यवहार मेरे साथ अच्छा नहीं हैं। जब देखो तब मुझे डांटती रहती हैं। वह आपमें और मुझमें कोई फर्क हीं नहीं समझती।

एक लंबा और मोटा आदमी दर्जी की दुकान पर गया। दर्जी ने बड़ी कठिनाई से नाप ली और हांफते हुए बोला–सिलाई के सौ रूपये लगेंगे।
लेकिन फोन पर तो तुमने पचास रुपये बताए थे– आदमी ने कहा।
दर्जी ने पसीना पोंछते हुए कहा–जीं हां, बताए थे। पर वह शेरवानी के बताए थे, शामियाने के नहीं।

वक्ता–मुझे खेद है कि मैं काफी देर तक बोलता रहा। मैं आज अपनी घड़ी घर भूल आया हूँ। इसलिए समय का अंदाजा नहीं रहा।
मगर जनाब दीवार पर कलेंडर भी तो लटक रहा था–श्रोताओं में से एक ने कहा।

बारिश में भीगता हुआ डाकिया आया और दरवाजे पर आवाज दी–खत ले लो। नौकर ने निकल कर कहा–भई, इतनी बारिश में क्यूं आए, खत डाक से भेज दिया होता।

नौकरः साहब, मुझे नौकरी पर रख लो।
मालिकः लेकिन मैं बिना जान–पहचान के तुम्हें नौकरी पर कैसे रख सकता हूँ।
नौकरः साहब, पहले नौकरी पर रख लो। जान–पहचान तो फिर होती रहेगी।

मुझे चित्रकार बनना चाहिए कि लेखक?
मोहनः चित्रकार!
रोहनः चित्रकार क्यों?
मोहनः क्योंकि तुम्हारी लिखी कहानी मैं पढ़ चुका हूं।

मोटापा जीवन-शत्रु एवं समस्त बीमारियों की जड़

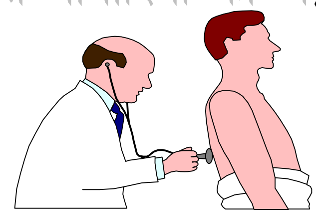

डा. कुसुमलता मिश्रा
चिकित्सका एवं संयोजिका,
नैनी गुरुद्वारा, इलाहाबाद।

आज व्यक्ति अपने शरीर के प्रति काफी सचेस्ट है। किन्तु मुख्य रुप से वह कहीं न कहीं भयंकर चूक कर जाता है। वह भी भोजन के मामले में जो अत्यन्त खतरनाक हो सकता है। भविष्य में भौतिक वादी युग में शारीरिक श्रम कम हो गया है। फलतः स्थूलता बढ़ती जा रही है जिससे मोटापे का भयावह रोग समस्त दुनियॉ में बड़े पैमाने पर व्याप्त हो गया है। मोटापा एक ऐसी शारीरिक स्थिति है जो स्वयं तो एक रोग है ही साथ ही तमाम जटिल एवं गभीर रोगों का कारक है– उसे फैट, ओबेसिटी, मंद बुद्धि स्थूलता फरबही, वासाधिम्य आदि भी कहते हैं। यह चयापचय प्रणाली, मिथ्याहार, बिहार के असंतुलन से बढ़ता है। इस रोग के कई कारण हो सकते हैं जैसे माता–पिता का स्थूल होना। जन्म के समय बच्चे का वजन सात पौण्ड से अधिक होना, या हार्मोन्स असंतुलन।

शिशुकाल में बच्चों को आवश्यकता से अधिक भोजन की प्रवृति को बढ़ावा देना, अधिक चाकलेट, बिस्किट मैदे से बनी वस्तुओं का प्रयोग, पढ़ने की ओर प्रेरित करना एवं खेल से रोकना, इनडोर गेम, बैठे–लेटे टीवी देखना, घर के कामों में सहयोग न लेना, स्टार्च एवं कार्ब्रोहाइड्रेट का अधिक सेवन, कार, स्कूटर पर बच्चों को घुमाना, उन्हें पैदल न चलने देना, बिना खाना पचे बार–बार खाना या नाश्ता करना, हर समय कुछ न कुछ खाने की प्रवृति किशोरों एवं वयस्कों में मुख्य मोटापे का कारण है।

शरीर में मांसपेशियों तथा पेशियों के उपर और त्वचा के नीचे भेद (चर्बी लिपिड फैट्स) बहुत बढ़ जान से वक्ष का भाग नितंम्ब पेट थलथलाने लगते है।

मोटापे का कारण एवं कष्टः अधिक भोजन, घी तेल युक्त, चीनी, निशास्टा भैंस दूध, सुख एवं आराम, आलस्य, एवं अर्कमण्य जीवन पद्धति हमारे शरीर के पंजर अर्थात ढॉचे पर अतिरिक्त बोझ डाल देते है। जिससे बेचारे हृदय को चैागुनी मेहनत करनी पड़ जाती है। फलतः थोड़ा श्रम करने पर हांफ हो आती है। रक्त में वसा का स्तर बढ़ जाता है जिससे धमनी बाल्व में रूकावट हो जाती है जिससे रक्त भार दाब में बृद्धि हो जाती है हृदय की ध ड़कन अनियमित हो जाती है, चेहरे पर उम्र झलकने लगती है चेहरा मुरमुरा हो जाता है।

पित्ताशय में पथरी, अग्नाशय की निष्क्रियता से मधुमेह, कंधों, कमर एड़ी, घुटने में आमवात की वजह से दर्द हो जाता है व्यक्ति गलावरोध एवं नींद में खर्राटें भरने लगता है, आमाशय में गैस भरी रहती है, कब्ज हो जाती है थोड़ी गर्मी या सर्दी बरदास्त करने की क्षमता कम हो जाती है, भूख कम हो जाती है हीमोग्लोबिन का स्तर गिर जाता है। इम्पोटेंसी का प्रकोप प्रभावी हो जाता है। दाम्पत्य शीतल प्रधान हो जाता है।

मोटापे से कन्यायें स्त्रियॉ ज्यादा दुखी हो जाती है। धनवान साधन सम्पन्न महिलायें विकलागों सा जीवन जीती है। बैठ कर स्नान करना, सीढ़ी चढ़ना उनके लिए असम्भव सा हो जाता है।

मोटापन कम कैसे करेंः आजकल स्कीम ऐण्ड ट्रीम या तुरंत मोटापा कम करने की तमाम औषधियां है जो अत्यन्त नुकसानदेह है। मोटापा धीरे–धीरे कम करे। एक साथ मोटापा घटाने से व्यक्ति कमजोर हो जाता है। उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी घट जाती है। त्वचा में झुर्री आ जाती है। कार्वोहाइड्रेट की मात्रा कम करें, सलाद का अधिक से अधि सेवन फूर्तिलेपन के साथ करें। नीबू पानी में एक चम्मच शहद डालकर पिये। चावल, आलू चीनी मैदा, वनस्पति घी, तेल का प्रयोग बिल्कुल बन्द करें। योगाभ्यास करे, भोजन चबाकर खायें, एवं भूख लगने पर ही भोजन करे। फाल्स भूख लगे तो एक गिलास पानी पिये। अपने आपको व्यस्त रखें। याद रखें मोटापा आपकी ज़िदंगी के 20 वर्ष तक कम कर देता है। मेहनतकश लोग सदैव फूर्तीलें होते है एवं आराम तलब लोग ब्लडप्रेशर, मधुमेह, हाइपरटेंशन, हार्ट अटैक के रोगी बनकर अंतिम समय तक परहेज करते है। समयपूर्ण कूच भी कर जाते है।

अतः स्वस्थ और सम्पूर्ण जीवन जीने के लिए मोटापा से परहेज करें। टहलना, व्यायाम, जागिंग, संतुलित आहार, अंकुरित अनाज एवं सलाद का सेवन, चर्बीयुक्त भोजन का परित्याग करे और आजीवन स्वस्थ रहे।

नोटः पादपश्चिमोत्तान आसन, पवन युक्त आसन, मोटापा कम करने में काफी कारगर सिद्ध हुआ है। एक्यूपंचर एवं एक्यूप्रेशर से भी मोटापा कम होता है।

सुक्तियॉ

सदा मुस्कराते रहो।
जिंदगी में पीछे देखते हुए आगे की ओर बढ़ो

युवा मस्तिष्क पर हमला यानी स्किजोफ्रेनिया

डॉ0 जी0एन0दूबे
गुप्त रोग विशेषज्ञ, दाउ जी क्लिनिक,
गोरखपुर रोड, सिविल लाईन्स, देवरिया

हमारे देस में एक करोड़ से ज्यादा लोग स्किजोफ्रेनिया नामक गंभीर मानसिक बीमारी से ग्रसित हैं, उनमें 20 प्रतिशत से 25 प्रतिशत लोगों का निदान होकर सही इलाज हो रहा है, बाकी के 75 प्रतिशत से 80 प्रतिशत लोग इस बीमारी को दूर करने के लिए तांत्रिक, ज्योतिष आदि के पास जाकर ताविज, झाड़–फूंक, मंत्र, पूजा–उपासना या जादू–टोने करवाते है। स्किजोफ्रेनिया भूत–प्रेत, जादू या ऊपरी हवा का असर नही हैं। यह गलत पोषण या व्यक्तित्व की किन्हीं कमियों की वजह से नहीं होता। 'स्किजोफ्रेनिया दिमाग के डोपामाइन या सेरोटोनाइन नामक रासायनिक पदार्थो की अव्यवस्था या गड़बड़ी से होता है। जिससे व्यक्ति की सोचने की काम करने की तथा भावात्मक क्षमताएं अव्यवस्थित हो जाती है। दिमाग में रसायनों का संतुलन एक उम्र पर आकर अपने आप संतुलित होता है। कुछ लोगों में ये बीमारी वंश में भी चलती है। अधिकतर यह बीमारी किशोरावस्था से लेकर 30 सल तक की उम्र में शुरू होती है और बीमारी लगने के बाद वह मधुमेह या रक्तचाप की बीमारी की तरह वे पूरी जिंदगी व्यक्ति इस बीमारी का मरीज रहता है।

इस बीमारी के जितने गंभीर पहलू हैं उससे बराबरी से टक्कर लेने के लिए अनुसंधानकर्ताओं में कई खोजें भी की है। आधुनिक विज्ञान का इस देन के कारण तथा मनोवैज्ञानिक और मनोचिकित्सक मिल कर इस गंभीर बीमारी के मरीज को सामान्य जीवन व्यतीत करने में मदद दे सकते हैं। मरीज को उसके लिए सिर्फ समयानुसार अपने मनोचिकित्सक से मिलना होता है तथा जैसे कहा गया है वैसी ह दवाइंया लेनी पड़ती है। इस प्रकार इलाज करवाने वाले कई मरीज फिर से पूर्ण कार्यदक्षता तथा कार्यक्षमता से अपना व्यवसाय या सामाजिक जीवन औरों की तरह व्यतीत कर सकते हैं।

स्किजोफ्रेनिया के इलाज में दवाई के अलावा मनोवैज्ञानिक चिकित्सा की भी आवश्यकता होती है जिनमें बीहेवियर थेरापी, फैमिली थेरापी, सामाजिक –व्यावसायिक पुर्नवसन थेरापी के परिणाम बहुत प्रभावी देखे गए हैं। परिवार वालों को भी बीमारी के बारे में तथा मरीज के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाए जिससे कम प्रयत्न तथा कम समय में मरीज को पुनः सामान्य जीवन में लाया जा सके यह सीखना चाहिए।

कई बार ठीक से निदान न हो पाने के कारण स्किजोफ्रेनिया का सही इलाज नहीं हो पाता है। क्योंकि इसके लक्षण कई बीमारियों से मिलते–जुलते हैं। स्किजोफ्रेनिया का अगर इलाज न कराए जाए तो यह बीमारी कुछ हिस्सों में तेजी से बढ़ती है, और गंभीर रूप धारण कर सकती है जिससे जीवन में निम्नलिखित खतरे पैदा हो सकते हैं।

0 आल्कोहोल या नशे का सेवन अत्यधिक मात्रा में करना।

0 दिन–प्रतिदिन व्यवहार के प्रति उदासीनता (शारीरिक) आना।

0 नींद और भूख कम होना या कई दिनों तक लगातार खाना न खाना तथा न सोना।

0उत्तेजनात्मक व्यवहार (तोड़–फोड़, गाली–गलौज, हिंसा) सतत करने लग जाना, जिससे परिवार तथा दूसरें के लिए खतरा पैदा होना।

---

0 वास्तविकता से संबंध टूट जाना, जिससे वैवाहिक, व्यवसायिक एवं पारिवारिक जीवन लगभग संपूर्ण रूप से खंडित हो जाना।

0स्किजोफ्रेनिया भूत–प्रेत, जादू या ऊपरी हवा का असर नहीं है।

0 यह बीमारी दिमाग के रसायनिक पदार्थो के असंतुलित होने से होती है।

0 मनोचिकित्सक से लगातार इलाज ही बचाव है।

0बिना मनोवैज्ञानिक द्वारा दी गई थेरापी से बेहतर परिणाम देखे गए हैं।

0 परिवार के सदस्यों को बीमारी के बारे में अवश्य सीखना चाहिए।

फोन न0 ☎31187

कमल बैट्रीज

प्रेमनगर, कुण्डा, प्रतापगढ़

हमारे यहॉ इनवर्टर, बैट्री, चार्जर, इमरजेंसी लाइट, स्टेपलाइजर आदि कुशल कारीगरों के द्वारा बनाकर गारन्टी के साथ उचित मूल्य पर दिये जाते हैं।

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

प्रो0 बबलू विश्वकर्मा

इधर–उधर की

अंडो से तैयार हो रहा है सांप के जहर की दवा

बंगलौर। सांप के काटने पर आमतौर पर घोड़े के खून से बनी दवा का इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन अब भारतीय विज्ञानी सांप के विष के असर को समाप्त करने के लिए मुर्गी के अंडो से दवाई बनाने की तकनीक विकसित करने की कोशिश कर रहे है। और इस काम में आंशिक सफलता भी मिल गई है। बंगलौर में विठ्ठल मल्लया साइंटिफिक रिसर्च फाउंडेशन के निदेशक और सीईओ डॉक्टर पी.वी.सुब्बाराव के मुताबिक साल में सांप के काटने के लगभग तीन लाख मामले दर्ज होते है। इस लिहाज से सर्प विष रोधी अंडा विकसित करना बहुत ही अच्छा है क्योंकि घोड़े के खून से तैयार होने वाली एएसवी दवा के अन्य विपरित प्रभाव भी होते है।

कम्प्यूटरः जितनी आसानी उतनी आफत

नार्वे में कम्प्यूटर पर लगातार 36 घंटे तक बैठकर काम कर रहे एक युवा मिरगी के दौरे से मर गया। ड्रक्सबैक शहर में उसके दोस्त एक कम्प्यूटर मीटिंग के लिए मिले तो उसे कम्प्यूटर के सामने मुरदा हालत में पाया। पुलिस ने बताया कि उन्होंने सुन रखा है कि अगर कोई व्यक्ति बहुत देर तक कम्प्यूटर के सामने बैठकर काम करे तो उसे मिरगी का दौरा पड़ सकता है। हालांकि पुलिस के पास इस बात ठोस सबूत नहीं है।

चावल का दूध

थाईलैंड में लोग अब गाय, भैंस या बकरी की बजाय चावल का दूध भी पी सकेंगें। यह दूध ज्यादा खुशबूदार और पौष्टिक होता है। विज्ञानियों का कहना है कि इसमें कोलेस्ट्रॉल भी कम होता है। वैसे छोटे बच्चों के लिए यह दूध ठीक नहीं माना गया है। इसमें उतने प्रोटीन नहीं होते, जितने गाय के दूध में होते है। चावल के पाउडर में पानी मिला कर उसमें एंजाइम पैदा किए जाते हैं, जिससे यह दूध तैयार होता है।

बच्चों को धूल–मिट्टी से बचाकर मत रखिए

अगर आप बच्चे की सेहत ठीक रखना चाहते है, तो उसे धूल–मिट्टी से बचाकर मत रखिए, बल्कि कुछ देर उसे बाहर खुले में खेलने भेज दीजिए। मिट्टी में कुछ ऐसे जीवाणु पाए जाते हैं, जो बच्चे के स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होते है। इससे इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यहीं नहीं अगर बच्चा ज्यादा साफ–सुथरे माहौल में रहे, तो आगे चल कर उसे दमे और कई तरह की एलर्जी होने का डर रहता है।

कॉफी सांसो की तकलीफ को रोकती है

कॉफी के क्या–क्या फायदे और नुकसान हैं, इस पर हमेशा से बहस चलती रही है, लेकिन यह बात साबित हो गई है कि एलर्जी के कारण हुए बुखार में कॉफी काफी फायदेमंद हैं। इसमें मौजूद कैफीन सूजन, खुजली या सांसों की तकलीफ जैसे एलर्जी के लक्षणों को रोकती है। यही नहीं यह कैफीन पारकिंसंस बीमारी को नियंत्रित करने में भी सहायता करती है।

आप भी बच सकते है गंजेपन से

गंजेपन से महिलाएं कम और पुरूष ज्यादा आशंकित रहते हैं। कई बार तो समय से पहले ही बाल झड़ने से पुरूष अपनी उम्र से ज्यादा नजर आने लगते है। लेकिन अब एक नए परीक्षण से शायद उन्हें कुछ राहत मिलेगी।

किसी के बालों में कौन–सा रोग होगा, कब बाल झड़ेगे और कब वह पूरी तरह गंजा हो जाएगा, यह जानने के लिए अब एक ऐसा परीक्षण किया जाने लगा है, जिससे व्यक्ति पहले से सावधान होकर जरूरी इलाज करा सकेगा। इसके लिए दो लैंस लगे कैमरे से सिर की त्वचा की बहुत करीब से तसवीर खींची जाती है। डॉक्टर त्वचा और बालो का अध्ययन कर के बता सकता है कि किसी खास व्यक्ति के बालो का क्या भविष्य होगा।

अब दिमाग पढ़ा जाएगा

यहां के एक न्यूरोविज्ञानी ने दिमाग पढ़ने का दावा किया है। उसने इस तरह की एक विधि तैयार की है, जिससे वह 11 सितंबर को हुए हादसे के आरोपियों का दिमाग पढ़ कर बता सकेगा कि वाकई उनकी इस हादसे में उनकी मिलीभगत थी या नहीं। इसके लिए आरोपी के सिर के आसपास इलेक्ट्रोड्स बांध कर उसके सामने कम्प्यूटर पर ऐसे चित्र या तथ्य दिखाएं जाएंगे, जिनकी जानकारी उसे हो सकती है। अगर उसका दिमाग ऐसे किसी चित्र या तथ्य पर प्रतिक्रिया करता है, तो इसका मतलब यह माना जाएगा कि वह किसी न किसी तरह इस हमले से संबंधित था या है।

इधर–उधर की

आप भी इस स्तम्भ के लिए कुछ खास खबरे जोआपके संज्ञान मेंहो या कोई नया आविष्कार हुआ हो तो हमें भेज सकते हैं। अच्छी खबर को हम अवश्य ही प्रकाशित करेंगे। अच्छी खबरें के छपने पर हम आपको हजारोंरुपये के ईनामी कूपन भी भेजेंगें तो देर किस बात की। कलम उठाइए और लिख भेजिए हमारे पते पत्र–व्यवहार के पते पर।

कहानी

निर्णय

शकुन्तला सरन

क्या औरत गीली मिट्टी का एक गोला है? जिसके हाथ यह गोला लग जाता है वह उसे मन चाहा आकार देने को व्यग्र हो उठता है। कम से कम पिछले तीन सालों से, जब से इस घर में ब्याह कर आई हूँ, यही देख रही हूँ। सास,ससुर अपनी मान्यताओं और मूल्यों को मेरे मन मे पैठा कर आदर्श बहू बनाना चाहते हैं। परम्पराओं का बोझ मुझे ही उठाना है सिर्फ मुझे यह बताने से नहीं चूकते। और पति, उनकी कसौटी पर मुझे शत–प्रतिशत ख़रा उतरना ही है यह तो सभी मानते है।

मां बाप ने भी चलते समय यही सीख दी थी। "सबकी ख़ुशी में ही अपनी ख़ुशी समझना" इसीलिए ससुराल में जो भी करती हूँ सबको ख़ुश करने के लिए, यहां तक कि मैं बैटा भी इसलिए चाहती थी कि बेटे के जन्म से घर के सब लोग ख़ुश होंगे। मेरी अपनी इच्छा न कोई महत्व रखती है और न मेरी अपनी ख़ुशी।

सास ससुर की इच्छानुसार ढ़लते–ढ़लते मैं यह भी भूल गई हूं कि यहां आने से पहले मेरा अपना कोई निजी आकार था भी या नहीं? शायद नहीं, शादी से पहले जो आकार था, वह तो मेरी मां का सपना था, जिस सपने को मां ने मुझमें साकार किया था। अगर यह सब सच नहीं है तो जब आज निर्णय लेने की घड़ी है। दृढ़ता से हां या ना कहने की बेला है तो मैं द्वन्द में क्यों फंसी हूँ।

यह सच है कि किसी बात के बारें में निर्णय लेने में इतनी कठिनाई मुझे कभी नहीं हुई। हिचक का कारण है मेरी बेटी दिव्या।

दिव्या मेरे आसपास ही खेल रही है। एक साल पांच महीने की नन्हीं जान को भी आभास है कि उसकी मां उदास है, चिन्ताग्रस्त है। अनमनी है, दुखी है। तभी तो वह हर तरह से मुझे रिझाने की कोशिश कर रही है।

> मुझे दिव्या को छोड़कर कैरियर बनाना, अमानवीय लगता है। बेटी के साथ अन्याय लगता है। पर मुझ पर पति का दबाव इतना अधिक है कि दृढ़ता से उनकी आंखों में आंखे डालकर 'नहीं' कह ही नहीं पाती।

बालकनी से बाहर झांक कर दिव्या सब्ज़ी वाले की नकल में पुकारती है "मतल, टम्पा, जोबी, आलू" मुझे हंसी आ जाती है इस शाम के धुसलके में इसे सब्जी वाल ा कैसे याद आ गया?

मेरे हंसने से दिव्या का साहस बढ़ता है वह मुझे खुश करने की एक कोशिश और करती है! अपनी छोटी सी उंगली को मेरी बांह में छुआ कर कहती है "जे मम्मा!" फिर मेरी नजरों में नजरें डालकर, अपनी गर्दन टेढ़ी करके अपने गाल पर उंगली कोंच कर कहती है "जो डिब्बा"। मेरी डिबिया कहते हुए मैं लपक कर उसे गोद में उठा लेती हूँ। मेरी आंखों में जो आंसू भरे थे उनमें से एक बूंद आंख की कोर में अटकी रह गई थी। दिव्या मेरी आंखों में झांकती है, वह एकदम चुप है आंसू देखकर कुछ उदास, फिर धीरे से उस आंख में अटकी बूंद को छूती है और उंगली से ही उस पानी को गाल पर फैला देती है। मेरी बिटिया अपने ही ढंग से मेरे आंसू पोछती है।

दिव्या का अनुराग देखकर मैं और भी विकल हो उठी। प्रश्न फन उठाकर खड़ा हो गया। जो सवाल मुझे व्यथित किए है वह शायद दूसरों की नज़र में इतना बड़ा न भी हो। सवाल सिर्फ इतना ही है कि मैं दिव्या को अपनी सास के पास छोड़कर, विदेश पढ़ने के लिए जाऊ या न जाऊ?

पति की राय में मुझे जाना ही चाहियें ऐसे मौंके बार–बार नहीं आते। किसी तरह का मोह या भावुकता मेरा कैरियर चौपट कर देगी। कैरियर बनाने की यही उम्र हैं। बच्चों के लिए तो सारी जिन्दगी करना ही हैं पति मेरे विदेश जाने में बड़ी–बड़ी सम्भावनाएं देख रहे है। आज नहीं तो कल वह भी जायेंगे ही। दिव्या या तो अपनी दादी के पास रहेगी या फिर बुला लेंगे उसे बाद में, जब हम वहां सैटिल हो जायेंगे, सोंचेंगे।

जैसे विदेश में जाकर बस जाना ही जीवन का चरम लक्ष्य हो।

मैं फिर उलझ गई, दिव्या को गोंद से उतार दिया। बत्ती जलाई और फिर उसी कुर्सी पर बैठ गई। दिव्या ने मेरी ओर देखा, फिर पास में रक्खी खिलौनों की टोकरी उलट दी।

टोकरी उलटते ही बच्ची के मन का विषाद धुल गया, वह दोनों हाथों से मगन होकर खिलौनों को बिखेरने लगी। खिलौने बिखराते बिखराते उसे कुछ याद आया, मेरी साड़ी खींच कर बोली 'मंकी', 'मंकी'।

"ओ़फ़्फ़ो! मुझे नहीं मालूम कहां है तेरा मंकी!" मैंने दिव्या को झिड़क दिया। वह रोने जैसी हुई, फिर कुछ सोच कर दूसरे खिलौंनों से खेलने लगी। वह अपने खिलौनों को बहुत प्यार करती है। आनन्द में निमग्न दिव्या जब खिलौनों से खेलती है, तो एक–एक खिलौना उसके लिए प्राणमय हो उठता है, देखने वाले को भी ऐसा भास होता हे कि खिलौने सजिव होकर दिव्या के साथ नाच रहे हैं। उसके लिए कल्पना और सच का अन्तर मिट जाता है। दिव्या के संसार में दिव्या खुद है और उसके खिलौनें है। खिलौनें उसके

है, सिर्फ उसके। उसके और खिलौनें के बीच तीसरा कोई नहीं।

पर मेरी दिव्या, सिर्फ़ मेरी नहीं। मेरे और उसके बीच में बहुत बड़ा संसार है, लाभ है, हानि है, किसी की नाराजी है, किसी की खुशी है। दिव्या सिर्फ मेरी नहीं, मैं उसके बारे में मन चाहा निर्णय नहीं ले सकती। तभी तो आज सोच–विचार की नौबत आई है।

मुझे दिव्या को छोड़कर कैरियर बनाना, अमानवीय लगता है। बेटी के साथ अन्याय लगता है। पर मुझ पर पति का दबाव इतना अधिक है कि दृढ़ता से उनकी आंखों में आंखें डालकर 'नहीं' कह ही नहीं पाती। उनकी नाराज़ी, उदासीनता का डर मुझे भीतर तक कमज़ोर बना देता है। दूसरी ओर उनका सान्निध्य भी मुझे बल नहीं देता। पति के गौरवशाली व्यक्तित्व की गरिमा में दब कर रह जाती हूँ। मुझे अपने ढुलमुल चरित्रा और दृढ़ताविहीन व्यक्तित्व से घृणा होने लगती है।

मुझे फिर उलझनों में उलझा जानकर फिर मेरे पास आ गई, और छः इंच की छोटी प्लास्टिक की गुड़िया दिखा कर बोली 'निन्नी', 'निन्नी'।

दिमाग़ इतना परेशान था कि मैंने दिव्या की बात पर ध्यान ही नहीं दिया। दिव्या ने गुड़िया को अपने कलेजे से लगा लिया और झूम झूम कर ऊं ऊं ऊं की सस्वर लोरी गा गा कर अपनी गुड़िया को सुलाने लगी।

मातृत्व की गरिमा से मंडित होकर जन्मी है मेरी दिव्या। मुझसे तो कहीं अच्छी है मेरी बेटी।

गुड़िया को सुलाते–सुलाते खुद दिव्या की आंखें भी झपकने सी लगी।

मैं उसे उठाकर अंदर कमरें में आ गई। बत्ती जलाई, बिस्तर झाड़ा और दिव्या को लेकर लेटने की तैयारी कर रही थी, कि दिव्या पलंग के नीचे झांककर खुशी से चिल्ला उठी 'मंकी', 'मंकी'। बाहर जिस मंकी को खोज रही थी, वह पलंग के नीचे धूल भरे फर्श में लोट रहा था। अक्सर दिव्या मंकी को लेकर ही सोती है। आज न जाने कैसे दिव्या से बिछड़ कर, यहां पड़ा धूल चाट रहा था।

दिव्या ने धूल भरें मंकी को बिस्तर पर लिटा दिया और खुद भी पलंग पर चढ़ गई।

अभी अभी अच्छा खासा बिस्तर झाड़ा था कि इस मंकी ने बिस्तर पर धूल ही धूल कर दी। मैंने मंकी को उठाकर जमीन पर फेंक दिया, "छिः गन्दा है मंकी।"

दिव्या बिफर उठी, फुर्ती से पलंग से उतरी और मंकी को उठा कर अपने से चिपका लिया। मुझे हंसी आ गई। "फेंक दो मंकी को गन्दा है।"

दिव्या ने मुझे रोष से भरपूर नज़र देखा दृढ़ता से मंकी को चिपकाए–चिपकाए बिस्तर पर लेट गई और मंकी को भी लिटा लिया।

मैं चित्रावत सी बेटी के क्रिया कलाप देख रही थी एक दम से मस्तिष्क में बिजली सी कौंधी। मन पुलक उठा। मेरी सुकुमार बेटी की दृढ़ता ने मेरी आत्मा को छू लिया।

दिव्या अपना मंकी हरगिज़ नहीं फेंकेगी। और उसकी मम्मा? वह भी दिव्या को छोड़कर कहीं नहीं जायेगी।

मैं जिस निर्णय को लेने में पांच दिन से परेशान थी, वह पल भर में ले लिया गया था। ❍

रातोंकी बिदियॉ ना लगाया करो
मेरी निदियॉ उड़ जाती है
जूल्फोंको यूं बिखराया ना करो
मेरी राह बदल जाती है
फलकोंको यूं उठाया ना करो
मेरी जान ये बन जाती है
अपने रूप की परिभाषा यूं समझाया ना करो
दिवानोंकी रात बिखर जाती है।

✍ रजनीश कुमार तिवारी 'राज'

सूर्या होमियों हॉल

अजन्ता धर्मकांटा के पास, चकदौंदी, नैनी, इलाहाबाद

बाल एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ

समय : अपरान्ह 2:30 से 8:30 तक

डॉ0 शकुन्तला पंडित

लगन पंडित हाई स्कूल, चकदौंदी, नैनी, इलाहाबाद, प्रबंधक : नागेन्द्र पंडित

आपकी जुबान

पत्रिका अपने आप में परिपूर्ण है

खुशियों से भरा हो ये साल तुम्हारा नए साल का यही है छोटा सा उपहार हमारा।

सेवा में,

सम्पादक महोदय जी

हमें 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका का सितम्बर माह का अंक पढ़ने को मिला। पढ़कर ऐसा लगा कि ये पत्रिका अपने आप में परिपूर्ण है। देखने पर छोटी है पर है बहुत खास। आज के समाज को ऐसी पत्रिका की खास जरूरत है। श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी का धारावाहिक उपन्यास "दिल का पैगाम" हमें बहुत पंसद आई। पत्रिका परिवार को हमारे तरफ से नये साल की शुभकामनाएं।

के. निशा राईन
उप प्रधानाचार्य निरंकारी पब्लिक
स्कूल, खखरेरू, फतेहपुर

पत्रिका में अकल्पनीय सुधार हो रहा है

सेवा में,

संपादक महोदय

विश्व स्नेह समाज का जनवरी का अंक पढ़ने को मिला। मैं तो इस वार्षिक सदस्य हुं। लेकिन यह अंक मेरे दिल का लुभा गया। अब तक निकले अंकों में जनवरी का अंक सबसे अच्छा है। अगर हम यह कहें कि पत्रिका के पहले अंक से लेकर इस अंक तक अनवरत सुधार हो रहा है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। हां अक्टूबर अंक से सुधार में कुछ ज्यादा ही तेजी आ गई है। कवर की कमी थी वह भी अब काफी हद तक दूर हो गया है। इस अंक में प्रकाशित लेख 'जिन्ना नहीं चाहते थे कि पाकिस्तान में लोकतांत्रिक सरकार रहे' जानकारी देना वाला लेख है। इसके अलावा 'दिल का पैगाम' डॉ0 कुसुम लता मिश्रा का थायरायड ग्रंथि के रोग भी काफी अच्छा रहा। हमारी शुभकामनाएं पत्रिका परिवार के साथ है।

रीतेश पाठक
पुत्र श्री एस.एन.पाठक, बड़ी ग्वाल
टोली, इंदौर, मध्य प्रदेश

मूल–भूत आवश्यकता स्नेह का दर्शाता 'विश्व स्नेह समाज'

महोदय

आज मानव की मूल–भूत आवश्यकता स्नेह, करूणा, प्रेम और प्राणी मात्र के प्रति अपनत्व की भावना है, परन्तु हम ज्ञान व बौद्धिक दृष्टि से पिछड़ते जा रहे है।

यही कारण है कि आज साधन एवं सुख सुविधाओं से सम्पन्न होते हुए भी हम सब असंतोष, दुख व निराशा की गर्त में बढ़े जा रहे हैं और आनन्द व सुख की तलाश में भटक रहे है। हमारे समाज तथा मानव जाति से सम्बंधित जितनी भी समस्यायें आज है, उन सबका कारण भी इन्हीं मूलभूत गुणों का अभाव है। इन सभी का हल एक ही है– आत्मचेतना अर्थात् उसके प्रति संवेदनशीलता।

हमें आज अपना सारा प्रयत्न मानव को अधिक, सहनशील सभ्य व संवदेनशील

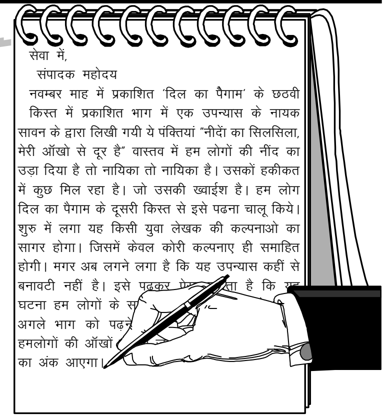

बनाने के लिए करना होगा। ये कार्य अत्यन्त दुष्कर अवश्य है पर असम्भव नहीं।

अक्टूबर अंक में प्रधान संपादक 'श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के वार्षिकांक के अवसर पर प्रकाशित विचार पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आज ऐसे भी लोग है जो इतने संवेदनशील है और जीवन तथा संसार की बुराई, दोषों तथा समस्याओं के साथ संघर्ष करते हुए भी मानव की आत्मा को उसके मूलभूत गुणों को ध्यान दिलाना चाहते है। उनहे हृदय को अपने शब्दों के माध्यम से झकझोरना चाहते है। मेरी शुभकामनाएं हैं कि अपके द्वारा किया जा रहा ये सत् प्रयास निरन्तर आगे बढ़ता रहे और मानव की उसकी आत्मा के प्रति बफावदार बनने को प्रेरित करे। इन्हीं शुभाकाक्षाओं के साथ।

मोनी तिवारी,
आईआईआई टी, पीपल गांव,
इलाहाबाद

पाठकों से अनुरोध

सभी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि उनकों पत्रिका कैसी लगी। पत्रिका में क्या कमियॉ है, क्या और डाला जाए क्या हटाया जाए आदि के बारें अपने विचार हमें निरन्तर भेजते रहें। आपके विचार ही हमारी सर्वोत्तम पूजीं है। **संपादक**

बेबाक

इराक से जंग में भारत की भूमिका नहीं होगी।
जार्ज फर्नाडिस
रक्षामंत्री,भारत

जब तक शिव सैनिक चाहेंगे, उधव पार्टी का नेतृत्व करते रहेंगे।
बाल ठाकरे
शिवसेना प्रमुख

राष्ट्रपति मुशर्रफ को बस में बैठकर भारत आना चाहिए और हमारे प्रधानमंत्री से हाथ मिलाना चाहिए।
विनोद खन्ना
विदेश राज्य मंत्री

कुंवारा होना ऐसी कोई विशेष बात नहीं है जिसका बार–बार उल्लेख किया जाएगा।
अटल बिहारी बाजपेयी
प्रधानमंत्री, भारतसरकार

शेर का स्वरूप धारण करें युवा
मुलायम सिंह यादव
अध्यक्ष, सपा

दबाब बनाने के लिए पोटा पर चल रहा है सोटा
मायावती
मुख्यमंत्री, उ0प्र0

मायावती ने कुठा में लगाया पोटा।
रघुराज प्रताप सिंह 'राजा भैया'
चर्चित विधायक, कुंडा

पोटा पर विधानसभा भंग कर सकती है मायावती।
आजम खां
नेता विपक्ष, उ0प्र0

शिक्षा विभाग कंगाल है। स्कूल खोलना तो दूर की बात, स्कूलों के रखरखाव और मरम्मत के लिए सरकार के पास पैसा नही है।
अमरजीत सिंह 'जनसेवक'
माध्यमिक शिक्षा राज्य मंत्री

पांक जिंदाबाद का नारा लगाने वाले मुर्दा कर दियें जायेंगे।
विनय कटियार
प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा

मंत्री बनना हो तो बसपा में आए।
मायावती
मुख्यमंत्री, उ0प्र0

तेल कंपनियों में हड़ताल से कर्मियों को ही घाटा है।
अरूण शौरी
दूरसंचार एवं विनिवेश मंत्री

पहली चाहत देश के लिए खेलना है।
लिएंडर पेस
भारतीय टेनिस खिलाड़ी

खलों में दुनिया को बदल देने की शक्ति है और हमें अपने काम से इस वाक्य को साकार रूप देना होगा।
नेलनसन मंडेला
पूर्व राष्ट्रपति, दक्षिणी अफ्रिका

कार्यकर्ताओं का अपमान हम किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करेंगे।
विनय कटियार
प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा

पोटा में बदलाव की कोई जरूरत नही है।
अरूण जेटली,
केन्द्रीय विधि मंत्री

गांधी की हत्या और गुजरात में हिंसा में सीधा रिश्ता है।
सोनिया गांधी
कांग्रेस अध्यक्ष

लिटिल मास्टर सचिन तेदुंलकर अच्छे बल्लेबाज ही नहीं उम्दा गेंदबाज भी है।
संजय माजरेंकर
पूर्व क्रिकेटर

केशरी नाथ त्रिपाठी अब तक के सबसे भ्रष्ट व बेईमान अध्यक्ष है।
प्रमोद तिवारी
नेता विधानमंडल दल, कांग्रेस

उदय प्रताप पर आरोप काल्पिनिक है।
कल्याण सिंह
पूर्व मुख्यमंत्री, उ0प्र

जो भी व्यक्ति लक्ष्मण रेखा को पार करेगा, उससे पार्टी पूरी कड़ाई से निपटेगी।
वेंकया नायडू
भाजपा अध्यक्ष

हमारे पास नरसंहार के हथियार नहीं है।
सद्दाम

आपको हमारा यह स्तम्भ कैसा लगा, इस पर अपने विचार हमेंअवश्य भेजें। अच्छे विचारोंको पुरस्कृत किया जायेगा

कार्टून की डायरीः

विधायक : ए भाई आओं चलते हैं बसपा की ओर एक तो सारे अपराधिक मुकद्में दब जाएंगे दूसरे लाल बत्ती मिल जायगी। और चाहिए ही क्या हम नेताओं को।

***हम भी क्या करें, चुना तो था क्षेत्र में काम करने के लिए तथा फला पार्टी के सिद्धात के लिए। हमं भी सोचते हैं किसी दूसरे को मौंका क्यों न दे दें। शायद कुछ बेहतर हो।**

दाउ जी

फोन न0 ☎2451394, 2658294

जहॉगीर मेमोरियल चैरिटेबुल अस्पताल

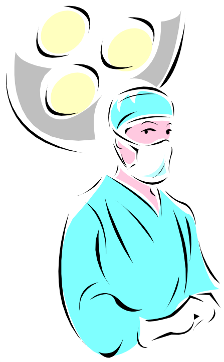

अरैल मोड़, अरैल पुलिस चौकी के पास, नैनी, इलाहाबाद

एक्सरे, अल्ट्रासाउण्ड, पैथॉलाजी, आपरेशन व अन्य सुविधायें 24 घंटे उपलब्ध

निदेशक : डॉ0 अनवार अहमद

निर्माणाधीन अनाथालय एवं बृद्धाआश्रम के सहायतार्थ बातचीत: 2552444

“स्NEह–2003” जी.पी.एफ. सोसायटी की तीसरा विशाल कार्यक्रम

युवाओं का एक भव्य एवं आकर्षक संगीतय कार्यक्रम। कार्यक्रम में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी कार्यक्रम स्थल पर सम्पर्क करें

दिनांक: 16 फरवरी 2003 समय: अपरान्ह 1 बजे

कार्यक्रम स्थल कार्यक्रम डांस प्रतियोगिता सोलों सांग बोल बेबी बोल पर्सनल परफामेन्स

एम.टेक. कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, धुस्सा पावर हाउस के पास, कौशाम्बी रोड, धुस्सा, राजरूपपुर, इलाहाबाद

एस. लेडिज दुपट्टा मैंचिंग कार्नर

चकमटाही, नैनी, इलाहाबाद

दुपट्टा, लेडिज सूट, ब्रा–पैन्टी, ब्लाउज, ब्लाउज पीस, साड़ी फाल

नोटः हमारे यहॉ डाई तथा पीकों की सुविधा उपलब्ध है

प्रो0 सुनील तिवारी

एक श्रद्धांजली स्व0 खोखा राय फोन:601939

खोखा राय का

ठंढा दही बड़ा

कम्पनी बाग, इलाहाबाद

प्रो0 खोखा राय

चाईनीज तकनीक से बना

जील ट्रान्सपैरेन्ट साबुन एण्ड वाशिंग पाउडर

नोटः
वितरक रहित क्षेत्रोंमे वितरक के लिए सम्पर्क करें।

मेंः0:एम.ए. एण्ड ब्रदर्श
501/2, करेली,
फोनः 551755, 654040

सुपर
रानी
डिटर्जेन्ट टिकिया
अधिक धुलाई कम खर्च

☎2461402

फैशन लेडीज टेलर्स

735/1, जायसवाल मार्केट, कटरा, इलाहाबाद

हमारे यहॉ सभी प्रकार के लेडिज सूट की सिलाई विशेष कारीगरों द्वारा उचित मूल्य पर की जाती है।

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

एक बार आयेंगे विज्ञापन पढ़कर,
बार–बार आयेंगे सूट पहनकर

प्रो0 राकेश गुप्ता